ॐ

नमो श्रीवीतरागाय ।

काशीनिवासी स्वर्गीय कविवर वृन्दावनजीकृत

श्रीवर्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

जिसे

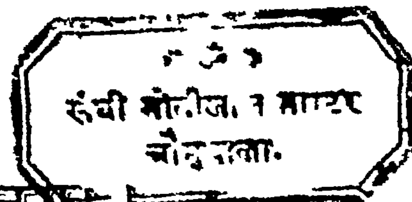
जैन-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय-बम्बईने छपाकर प्रकाशित किया ।

तृतीयवार] जनवरी १९२३ [मूल्य एक रुपया ।

॥ॐ॥ ॥ॐ॥

पूजाओंकी सूची।





श्रीपरमात्मने नमः ।

काशीनिवासी स्वर्गीय कविवर वृन्दावनकृत

वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

दोहा ।

वंदौं पाचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास ।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परमप्रकाश ॥ १ ॥
चौबीसौं जिनपतिनमौं, नमौं सारदा माय ।
शिवमगसाधक साधु नमि, रचौं पाठ सुखदाय ॥ २ ॥

नामावली स्तोत्र ।

छंद नयमालिनी, तथा तामरस व चंडी १६ मात्रा ।

जय जिनंद सुखकंद नमस्ते । जय जिनंद जितफंद नमस्ते ॥
जय जिनंद वरबोध नमस्ते । जय जिनंद जितक्रोध नमस्ते ॥ १ ॥
पापतापहरइंदु नमस्ते । अर्हवरनजुतबिंदु नमस्ते ॥
शिष्टाचारविशिष्ट नमस्ते । इष्ट मिष्ट उतकृष्ट नमस्ते ॥ २ ॥
पर्मधर्म वरशर्म नमस्ते । मर्मभर्मघन घर्म नमस्ते ॥
दृगविशाल वरभाल नमस्ते । हृदिदयाल गुनमाल नमस्ते ॥ ३ ॥
शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध नमस्ते । रिद्धिसिद्धिवरवृद्ध नमस्ते ॥
वीतराग विज्ञान नमस्ते । चिद्विलास धृतध्यान नमस्ते ॥ ४ ॥
स्वच्छगुणांबुधिरत्न नमस्ते । सत्त्वहितंकरयत्न नमस्ते ॥
कुनयकरीमृगराज नमस्ते । मिथ्याखगवरबाज नमस्ते ॥ ५ ॥

भव्यभवोदधितार नमस्ते । शर्मामृतसितसार नमस्ते ॥
दरशज्ञानसुखवीर्य नमस्ते । चतुरानन परधीर्य नमस्ते ॥ ६ ॥
हरि हर ब्रह्मा विष्णु नमस्ते । मोहमर्दमनु जिष्णु नमस्ते ॥
महादान महभोग नमस्ते । महाज्ञान महजोग नमस्ते ॥ ७ ॥
महा उग्रतपसूर नमस्ते । महा मौन गुणभूरि नमस्ते ॥
धरमचक्रि वृषकेतु नमस्ते । भवसमुद्रशतसेतु नमस्ते ॥ ८ ॥
विद्याईश मुनीश नमस्ते । इंद्रादिकनुतशीस नमस्ते ॥
जय रतनत्रयराय नमस्ते । सकल जीवसुखदाय नमस्ते ॥ ९ ॥
अशरनशरनसहाय नमस्ते । भव्यसुपंथलगाय नमस्ते ॥
निराकार साकार नमस्ते । एकानेकअधार नमस्ते ॥ १० ॥
लोकालोकविलोक नमस्ते । त्रिधा सर्व गुनथोक नमस्ते ॥
मल्लदल्लदलमाल नमस्ते । काममल्ल जितमल्ल नमस्ते ॥ ११ ॥

भुक्तिमुक्तिदातार नमस्ते । उक्तिसुक्ति शृङ्गार नमस्ते ॥
गुन अनंत भगवंत नमस्ते । जै जै जै जयवंत नमस्ते ॥ १२ ॥

इति पठित्वा जिनचरणाग्रे परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

समुच्चयचतुर्विंशतिजिनपूजा ।

छंद कवित्त ।

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपास जिनराय ।
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज पूजितसुरराय ॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय ।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पासप्रभु, वर्द्धमानपद पुष्प चढ़ाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक ।

चाल द्यानतरायकृत नंदीश्वरद्वीपाष्टककी तथा गरबाराग-
आदि अनेक चालों में बनता है।

मुनिमनसम उज्ज्वल नीर, प्राशुक गंध भरा।
भरि कनककटोरी धीर, दीनों धार धरा॥
चौबीसों श्रीजिनचंद, आनँदकंद सही।
पदजजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि० ॥

गोशीर कपूर मिलाय, केशररंग भरी।
जिनचरननदेत चढ़ाय, भव आतापहरी ॥चौ०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि० ॥

तंदुल सित सोम समान, सुंदर अनियारे।

मुकताफलकी उनमान, पुंज धरों प्यारे ॥ चौ०॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि० ॥

वर कंज कदंब करंड, सुमन सुगंध भरे ।

जिन अग्र धरौं गुनमंड, कामकलंक हरे ॥ चौ० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि० ॥

मनमोदनमोदक आदि, सुंदर सद्य बने ।

रसपूरित प्राशुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने ॥ चौ० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगें ।

सब तिमिरमोह क्षै जाय, ज्ञानकला जागै ॥ चौ० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि० ॥

दशगंध हुतासनमाहिं, हे प्रभु खेवत हों ।

मिस धूम करम जरि जांहिं, तुम पद सेवत हों ॥ चौ० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं नि० ॥

शुचि पक्व सरस फल सार, सब रितुके ल्यायौ ।
देखत दृगमनको प्यार, पूजत सुख पायौ ॥ चौ० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

जलफल आठों शुचि सार, ताको अर्घ करों ।
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों ॥ चौ० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥

जयमाला ।

दोहा ।

श्रीमत तीरथनाथपद, माथ नाय हितहेत ।
गावों गुणमाला अबै, अजरअमरपद देत ॥ १ ॥

छंद घत्तानंद ।

जयभवतमभंजन जनमनकंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छ करा ।
शिवमगपरकाशक अरिगननाशक, चौबीसों जिनराज वरा ॥ २ ॥

छंद पद्धरी ।

जय रिषभ देव रिषिगन नमंत । जय अजित जीतवसुअरि तुरंत ।
जय संभव भवभय करत चूर । जय अभिनंदन आनंदपूर ॥ ३ ॥
जय सुमति सुमतिदायक दयाल । जय पद्म पद्मद्युति तन रसाल ॥
जय जय सुपास भवपासनाश । जय चंद चंदतनद्युतिप्रकाश ॥ ४ ॥
जय पुष्पदंत द्युतिदंत सेत । जय शीतल शीतल गुननिकेत ॥
जय श्रेयनाथ नुतसहसभुज्ज । जय वासवपूजित वासुपुज्ज ॥ ५ ॥
जय विमल विमलपददेनहार । जय जय अनंत गुनगन अपार ॥
जय धर्म धर्म शिवशर्म देत । जय शांति शांति पुष्टी करेत ॥ ६ ॥

जय कुंथु कुंथुवादिक रखेय । जय अर जिन वसुअरि क्षय करेय ॥
जय मल्लि मल्ल हतमोहमल्ल । जय मुनिसुव्रत व्रतसल्ल दल्ल ॥ ७ ॥
जय नमि नित वासवनुत सपेम । जय नेमनाथ वृषचक्रनेम ॥
जय पारसनाथ अनाथनाथ । जय वर्द्धमान शिवनगरसाथ ॥ ८ ॥

घत्तानंद छंद ।

चौवीस जिनंदा आनँदकंदा, पापनिकंदा सुखकारी ।
तिनपद जुगचंदा उदय अमंदा, वासववंदा हितधारी ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा ।

भुक्तिमुक्तिदातार, चौवीसौं जिनराज वर ।
तिनपद मनवचधार, जो पूजै सो शिव लहै ॥ १० ॥

इत्याशीर्वादं (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

———

श्रीआदिनाथपूजा।

अरिल्ल।

परमपूज वृषभेष स्वयंभूदेवजू। पितानाभिमरुदेवि करै सुर सेवजू। कनकवरणतन तुंग घनुप पनशत तनों। कृपासिंधु इत आइ तिष्ठ ममदुख हनों॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीआदिनाथ जिन अत्र अवतर अवतर। संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः। अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट्।

अष्टक।

छंद द्रुतविलंवित तथा सुंदरी।

हिमवनोद्भव वारि सुधारिकैं। जजत हों गुनबोध उचारिकैं॥
परमभाव सुखोदधि दीजिए। जनममृत्युजरा छय कीजिये॥ १।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवजिनेंद्रेभ्यो जन्म मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामि इति स्वाहा॥

मलयचंदन दाहनिकंदनं । घसि उभै करमें करि वंदनं ।
जजन हों प्रशमाश्रम दीजिये । तपतनापत्रिधा क्षै कीजिये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि ॥

अमल तंदुल खंडविवर्जितं । सित निशेपहिमामियतर्जितं ॥
जजन हों तसु पुंज धरायजी । अखय संपति द्यो जिनरायजी ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभजिनेन्द्रेभ्योऽक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि ॥

कमल चंपक केतकि लीजिये । मदन भंजन भेट धरीजिये ॥
परमशील महा सुखदाय हैं । समरशूल निमूल नशाय हैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यः कामविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ।

सरस मोदनमोदक लीजिये । हरनभूख जिनेश जजीजिये ॥
सकल आकुलअंतकहेतु हैं । अतुल शांतसुधारस देतु हैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यः क्षुधादिरोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥

निविड मोहमहातम छाइयो । स्वपरभेद न मोहि लखाइयो ॥
हरनकारन दीपक तासके । जजत हों पद केवल भासके ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥

अगरचन्दन आदिक लेयकें । परम पावन गंध सुखेयकें ॥
अगनिसंग जरै मिस धूमके । सकल कर्म उड़े यह धूमके ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

सुरस पक्व मनोहर पावने । विविध लै फल पूज रचावने ॥
त्रिजगनाथ कृपा अब कीजिये । हमहि मोक्ष महाफल दीजिये ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि ॥

जलफलादि समस्त मिलायकें । जजत हों पद मंगल गायकें ॥
भगतवत्सल दीनदयालजी । करहु मोहि सुखी लखि हालजी ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥

———

पंचकल्याणक ।

छंद द्रुतविलंबित तथा सुंदरी ।

असित दोज असाढ़ सुहावनी । गरभमंगलको दिन पावनी ॥
हरि सची पितुमातहिं सेवही । जजत हैं हम श्री जिनदेवही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीऋषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

असित चैत सुनौमि सुहाइयो । जनममंगल तादिन पाइयो ॥
हरि महागिरपै जजियो तबै । हम जजैं पदपंकजको अबै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णानवमीदिने जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवृषभनाथाय अर्घं निर्व० ॥ २ ॥

असित नौमि सुचैत धरे सही । तपविशुद्ध सबै समता गही ॥
निज सुधारसमों झरलाइयो । हम जजैं पद अर्घ चढ़ाइयो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णनवमीदिने दीक्षामंगलप्राप्ताय श्रीआदिनाथाय अर्घं निर्व० ॥ ३ ॥

असित फागुन ग्यारसि सोहनों । परम केवलज्ञान जग्यो भनों ॥
हरि समूह जजैं तहँ आइकैं । हम जजैं इत मंगल गाइकैं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यमंगलप्राप्ताय श्रीवृषभनाथाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

असित चौदसि माघ विराजई । परम मोक्ष सुमंगल साजई ॥
हरि समूह जजे कयलासजी । हम जजैं अति धार हुलासजी ॥५॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीवृषभनाथाय अर्घं निर्व० ॥ ५ ॥

जयमाला ।

छंद घत्तानंद ।

जय जय जिनचंदा आदिजिनंदा, हनि भवफंदा कंदा जू ।
वासवशतवंदा धरि आनंदा, ज्ञान अमंदा नंदा जू ॥ १ ॥

छंद मोतियदाम ।

त्रिलोकहितंकर पूरन पर्म । प्रजापति विष्णु चिदातम धर्म ॥

जतीसुर ब्रह्मविदावर बुद्ध । वृषंक अशंक क्रियाम्बुधि शुद्ध ।२॥
जबैगर्भागममंगल जान । तबैं हरि हर्ष हिये अति आन ॥
पिताजननीपदसेव करेय । अनेक प्रकार उमंग भरेय॥ ३॥
जये[1] जब ही तब ही हरि आय । गिरेंद्रविषै किय न्हौन सुजाय ॥
नियोग समस्त किये तित सार । सुलाय प्रभू पुनि राज अगार ॥४॥
पिताकर सौंपि कियो तित नाट । अमंद अनंद समेत विराट ॥
सुथानपयान कियो फिर इंद । इहां सुरसेव करैं जिनचंद ॥ ५॥
कियो चिरकाल सुखाश्रित राज । प्रजा सब आनँदको तित साज ॥
सुलिप्त सुभोगनिमैं लखि जोग । कियो हरिने यह उत्तम योग ॥ ६॥
निलंजन[2]नाच रच्यो तुमपास । नवों रसपूरित भाव विलास ॥
बजै मिरदंग द्रमं द्रम जोर । चलै पग झारि झनांझन झोर ॥ ७॥

---

१ पैदा हुए । २ नीलांजना नामकी अप्सराने ।

घना घन घंट करै धुनि मिष्ट। बजै मुहचंग सुरान्वितपुष्ट।।
खड़ी छिनपास छिनै ही अकाश। लघू छिन दीरघ आदि विलास ॥८॥
ततच्छन ताहि विलै अविलोय। भये भवतैं भयभीत बहोय ॥
सुभावत भावन बारह भाय। तहां दिवब्रह्मरिषीश्वर आय ॥ ९ ॥
प्रबोध प्रभू सुगये निज धाम। तबै हरि आय रची शिवकाम ॥
कियो कचलौंच पिरागअरन्य। चतुर्थम ज्ञान लह्यो जगधन्य ॥१०॥
धरयो तब योग छमास प्रमान। दियो शिरियंस तिन्हैं इख दान।
भयो जब केवलज्ञान जिनेंद। समोसृतठाठ रच्यो सु धनेंद ॥ ११ ॥
तहां वृषतत्त्व प्रकाशि अशेस। कियो फिर निर्भयथानप्रवेस ॥
अनंत गुनातम श्रीसुखराश। तुमैं नित भव्य नमैं शिवआश ॥१२॥

छन्द घत्तानंद।

यह अरज हमारी सुनि त्रिपुरारी, जनम जरा मृति दूर करो।

शिवसंपति दीजे ढील न कीजे, निज लख लीजे कृपा धरो ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभदेवजिनेन्द्राय महार्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद आर्या ।

जो ऋषभेश्वर पूजै, मनवचतनभाव शुद्ध कर प्रानी ॥

सो पावै निश्चैसौं, भुक्ती औ मुक्ति सारसुखथानी ॥ १४ ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

इत्याशीर्वादः

इति श्रीआदिनाथपूजा समाप्त ।

श्रीअजितजिनेंद्रपूजा ।

छन्द अशोकपुष्पमंजरी दण्डक तथा अर्घमंजरी तथा अर्द्धनाराच ।

त्याग वैजयंत सार सारधर्मके अधार,

जन्मधार धीर नम्र सुष्टु कौशलापुरी ।

अष्टदुष्टनष्टकार मातु वैजयाकुमार,

आयु पूर्व लक्ष दक्ष है बहत्तर पुरी ॥

ते जिनेश श्रीमहेश शत्रुके निकंदनेश,

अत्र हेरिये सुदृष्टि भक्तपै कृपा पुरी ।

आय तिष्ठ इष्टदेव मैं करों पदाब्जसेव,

पर्म शर्मदाय पाय आय शर्न आपुरी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिन अत्रावतरावतर । संवौषट् । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ १ ॥

अष्टक ।

छंद त्रिभंगी अनुप्रासक ।

गंगाह्रदपानी निर्मल आनी, सौरभसानी सीतानी ।

तसु धारत धारा तृषानिवारा, शांतागारा सुखदानी ॥

श्रीअजितजिनेशं नुतनाकेशं, चक्रधरेशं खग्गेशं ।
मनवांछितदाता त्रिभुवनत्राता, पूजों ख्याता जग्गेशं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥

शुचि चंदन बावन तापमिटावन, सौरभ पावन घसि ल्यायो ।
तुम भवतपभंजन हो शिवरंजन, पूजानरंजन मैं आयो ॥श्री०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि० ॥

सितखंडविवर्जित निशिपतितर्जित पुंज, विधर्ज्जित तंदुलको ।
भवभावनिखर्जित शिवपदसर्जित, आनंदभर्जित दंदलको ॥श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं अजितजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ॥

मनमथमदमंथन धीरजग्रंथन, ग्रंथनिग्रंथन ग्रंथपती ।
तुअपादकुशेसे आदिकुशेसे, धारि अशेसे अर्चयती ॥ श्री० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥

आकुलकुलवारन थिरताकारन, छुधाविदारन चरु लायो।
षटरसकर भीने अन्न नवीने पूजन कीने सुख पायो॥ श्री०॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय चरुं नि०॥

दीपकमनिमाला जोतउजाला, भरि कनथाला हाथलिया।
तुम भ्रमतमहारी शिवसुखकारी, केवलधारी पूज किया॥श्री०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०॥

अगरादिकचूरन परिमलपूरन खेवत क्रूरन कर्म जरै।
दशहूं दिशि धावत हर्ष बढ़ावत, अलिगुणावत नृत्य करै॥ श्री०॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०॥

बादाम नरङ्गी श्रीफल चंगी आदि अभंगीसौं अरचौं।
सब विघनविनाशै सुखपरकाशै, आतम भासै भौविरचौं॥ श्री०॥ ८॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०॥

जलफल सब सज्जे बाजत बज्जै, गुनगनरज्जै मनमज्जै।
तुअ पदजुगमज्जै सज्जन जज्जै, ते भवभज्जै निजकज्जै ॥ श्री० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामि० ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक ।

छंद द्रुतमध्यक १६ मात्रा ।

जेठ असेत अमावशि सो है। गर्भदिना नँद सो मनमोहै ॥
इंद फनिंद जजे मनलाई। हम पद पूजत अर्घ चढ़ाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णामावास्यायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

माघसुदी दशमी दिन जाये। त्रिभुवनमें अति हरष बढ़ाये ॥
इंद फनिंद जजें तित आई। हम नित सेवत हैं हुलशाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने जन्ममंगलमंडिताय श्रीअजितजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

माघसुदी दशमी तप धारा । भव तन भोग अनित्य विचारा ॥
इंद फनिंद जजें तित आई । हम इत सेवत हैं सिरनाई ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लदशमीदिने दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितजिनेंद्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पौषसुदी तिथि चौथ सुहायो । त्रिभुवनभानु सु केवल जायो ॥
इंद फनिंद जजैं तित आई । हम पद पूजत प्रीत लगाई ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्थीदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्रीअजितजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

पंचमि चैतसुदी निरवाना । निजगुनराज लियो भगवाना ।
इंद फनिंदजजैं तित आई । हम पद पूजत हैं गुनगाई ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लपञ्चमीदिने निर्वाणमंगलप्राप्ताय श्रीअजितनाथाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

अष्ट दुष्ट को नष्ट करि, इष्ट मिष्ट निज पाय ।
शिष्ट धर्म भाख्यो हमें, पुष्ट करो जिनराय ॥ १ ॥

छन्द पद्धडी १६ मात्रा ।

जय अजित देव तुअ गुन अपार । पैं कहूं कछुक लघु बुद्धि धार ॥
दशजनमतअतिशय बलअनंत । शुभलच्छन मधुरबचन भनंत ॥२॥
संहनन प्रथम मलरहित देह । तनसौरभ शोणितस्वेत जेह ॥
वपु स्वेदविना महरूपधार । सम चतुर धरें संठान चार ॥ ३ ॥
दश केवल गमनअकाशदेव । सुरभिच्छ रहै योजन सतेव ॥
उपसर्गरहित जिनतन सु होय । सब जीव रहितबाधा सु जोय ॥४॥
मुखचारि सरबविद्याअधीश । कवलाअहारबर्जित गरीश ॥

चौ. १२

छायाविनु नख कच बढ़ै नाहि । उन्मेष टमक नहिं भ्रुकुटिमाहिं ॥५॥
सुरकृत दशचार करों बखान । तब जीवमित्रताभावजान ॥
कंटकविन दर्पणवत सुभूम । सब धान वृच्छ फल रहे भूम ॥ ६ ॥
षटरितुके फूल फले निहार । दिशि निर्मल जिय आनंदधार ॥
जहँ शीतल मन्द सुगंध वाय । पदपंकजतल पंकज रचाय ॥ ७ ॥
मलरहित गगन सुर जय उचार । वरषा गंधोदक होत सार ॥
वर धर्मचक्र आगें चलाय । वसुमंगलजुत यह सुर रचाय ॥ ८ ॥
सिंहासन छत्र चमर सुहात । भामंडलछवि वरनी न जात ॥
तरु उच्च अशोक रु सुमनवृष्टि । धुनि दिव्य और दुंदुभी मिष्ट ॥९॥
दृग ज्ञान शर्म वीरज अनंत । गुण छियालीस इम तुम लहन्त
इन आदि अनन्ते सुगुन धार । वरनत गनपति नहिं लहत पार १०॥
तव समवशरनमहँ इन्द्र आय । पद पूजत वसुविधि दरब लाय ॥

अति भगतिसहित नाटक रचाय । ताथेइ थेइ थेइ पुनि रही छाय॥११॥
पग नूपुर झननन झनननाय । तनननननन तननन तान गाय ॥
घननन नन नन घन्टा घनाय । छम छम छम छम घुंघरू बजाय॥१२॥
दृम दृम दृम दृम दृम मुरज ध्वान । संसाग्रदि सरंगी सुर भरत तान॥
झट झट झट अटपट नटत नाट । इत्यादि रच्यो अदभुत सुठाट॥१३॥
पुनि वन्दि इन्द थुति नुति करन्त । तुम हो जगमें जयवन्त सन्त ॥
फिर तुम विहार करि धर्मवृष्टि । सब जोग निरोध्यो परम इष्ट॥१४॥
सम्मेदथकी लिय मुकति थान । जय सिद्धशिरोमन गुननिधान ॥
वृन्दावन बन्दत बारबार । भवसागरतें मो तार तार ॥ १५ ॥

छंद घत्तानंद ।

जय अजित कृपाला गुनमणिमाला, संजमशाला बोधपती ॥
वर सुजसउजाला हीरहिमाला, ते अधिकाला स्वच्छ अती ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामि ?

छंद मदावलिप्तकपोल ।

जो जन अजित जिनेश जजै हैं, मनवचकाई ।
ताकों होय अनन्द ज्ञान संपति सुखदाई ॥
पुत्र मित्र धन्यधान्य सुजस त्रिभुवनमहँ छावै ।
सकल शत्रु छय जाय अनुक्रमसों शिव पावै ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः ।

श्रीशंभवनाथपूजा ।

छंद मदावलिप्तकपोल ।

जय शम्भव जिनचन्द सदा हरिगनचकोरनुत ।
जयसेना जसु मातु जैति राजा जितारसुत ॥
तजि ग्रीवक लिये जन्मनगर सावत्री आई ।
सो भवभन्जनहेत भगतपर होहु सहाई ॥ १ ॥

ॐ ह्री श्रीशंभवनाथ जिनेन्द्र । अत्रावतरावतर । संवौषट् ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवनाथ जिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवनाथ जिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक ।

छंद चौबोला तथा अनेक रागोंमें गाया जाता है ।

मुनिमनसम उज्जल जल लेकर, कनक कटोरीमें धारा ।
जनमजरामृतुनाशकरनकों, तुमपदतर ढारों धारा ॥
शम्भवजिनके चरन चरचतें, सब आकुलता मिट जावै ।
निजनिधि ज्ञानदरशसुखवीरज, निराबाध भविजन पावै ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि० ॥

तपतदाहकों कन्दन चन्दन मलयागिरिको घसि लायो ।
जगवन्दन भौफन्दनखन्दन समरथ लखि शरनै आयो ॥शं०॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि० ॥

देवजीर सुखदास कमलवासित, सित सुंदर अनियारे ।
पुंज धरों इन चरनन आगें, लहों अखयपदकों प्यारे ॥ शं० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि० ॥

कमल केतकी बेल चमेली चंपा, जूही सुमन वरा ।
तासौं पूजत श्रीपति तुमपद, मदनबान विध्वंसकरा ॥ शं० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० ॥

घेवर बाबर मोदन मोदक, खाजा ताजा सरस बना ।
तासों पदश्रीपतिको पूजत, छुधारोग ततकाल हना । शं० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥

घटपटपरकाशक भ्रमतमनाशक, तुमढिग ऐसो दीप धरों ।
केवलजोत उदोत होहु मोहि, यही सदा अरदास करों ॥ शं० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥

अगर तगर कृसनागर श्रीखंडादिक चूर हुताशनमें ।
खेवत हौं तुम चरनजलजढिग, कर्म छार जरि ह्वै छनमें ॥शं०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि० ॥

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला पिस्ता दाखर मैं ।
लै फल प्राशुक पूजों तुमपद, देहु अखयपद नाथ हमैं ॥शं०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि० ॥

जल चन्दन तन्दुल प्रसून चरु, दीप धूप फल अर्घ किया ।
तुमको अरपों भावभगतिधर, जै जै जै शिवरमनि पिया॥ शं०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥

पंचकल्याणक ।

छंद हंसी मात्रा १५ ।

मातागर्भविषै जिन आय । फागुनसित आठैं सुखदाय ॥

सेयो सुरतिय छप्पन वृंद । नानाविधि मैं जजों जिनन्द ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लाष्टम्या गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कातिक सित पूनम तिथि जान । तीनज्ञानजुत जनम प्रमान ॥
धरि गिरिराज जजे सुरराज । तिन्हें जजों मैं निजहित काज ॥२ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लपूर्णिमायां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मंगसिरसित पून्यों तप धार । सकल संग तजि जिन अनगार ॥
ध्यानादिक बल जीते कर्म । चर्चों चरन देहु शिवशर्म ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षपूर्णिमायां दीक्षाकल्याणकप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घंनिर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

कातिक कलि तिथि चौथ महान । घाति घात लिय केवलज्ञान ॥

समवशरनमहँ तिष्ठे देव । तुरिय चिह्न चर्चौं वसुभेवे ।४॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाचतुर्थीदिने ज्ञानसाम्राज्यमंगलप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्बपामीति स्वाहा ॥ ४॥

चैत शुकल तिथि षष्ठी चोख । गिरसमेदतैं लीनों मोख ॥

चारशतक धनु अवगाहना । जजों तासपद थुतिकर घना ॥ ५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लषष्ठीदिने निर्वाणकल्याणप्राप्ताय श्रीशंभवजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५॥

जयमाला ।

दोहा।

श्रीशंभवके गुन अगम, कहि न सकत सुरराज ।

मैं वशभक्ति सुधीठ है, विनवों निजहितकाज ॥ १॥

छंद मोतियदाम ।

जिनेश महेश गुनेश गरिष्ट । सुरासुरसेवित इष्ट वरिष्ट ॥
धरे वृषचक्र करे अघ चूर । अतत्त्वछपातममर्दनसूर ॥ २ ॥
सुतत्त्वप्रकाशन शासन शुद्ध । विवेक विराग बढ़ावन बुद्ध ॥
दयातरुतर्पनमेघ महान । कुनैगिरिगंजन वज्र समान ॥ ३ ॥
स गर्भरु जन्ममहोत्सवमांहि । जगज्जन आनँदकंद लहाहिं ॥
सुपूरब साठहि लच्छ जु आय । कुमार चतुर्थम अंश रमाय ॥ ४ ॥
चवालिस लाख सुपूरव एव । निकंटक राज कियो जिनदेव ॥
तजे कछुकारन पाय सु राज । धरे व्रत संजम आतमकाज ॥ ५ ॥
सुरेन्द्र नरेन्द्र दियो पयदान । धरे बनमें निज आतम ध्यान ॥
कियौ चवघातिय कर्म विनाश । लयो तव केवलज्ञानप्रकाश ॥ ६ ॥
भई समवस्रत ठाट अपार । खिरै धुनि झेलहिं श्रोगनधार ॥

भने षटद्रव्यतने विसतार । चहूं अनुयोग अनेकप्रकार ॥ ७ ॥
कहे पुनि त्रेपन भावविशेष । उभै विधि हैं उपशम्य जुभेष ॥
सुसम्यकचारितभेदस्वरूप । अवैं इमिछायक नौ सुअनूप ॥ ८ ॥
दृगौ वुधि सम्यक चारितदान । सु लाभ रु भोगुपभोगप्रमान ॥
सु वीरज संजुत ए नव जान । अठार छयोपशमं इम मान ॥ ९ ॥
मति श्रुत औधि उभै विधि जान । मनःपरजै चखु और प्रमान ॥
अचखु तथावधि दान रु लाभ । सुभोगुपभोग रु वीरजसाभ ॥१०॥
व्रताव्रत संजम और सु धार । धरे गुन सम्यक चारित भार ॥
भये वसु एक समापत येह । इकीश उदीक सु नो अब जेह ॥ ११ ॥
चहूं गति चारि कषाय तिवेद । छलेश्यय और अज्ञानविभेद ॥
असंजमभाव लखो इसमाहिं । असिद्धित और अतत्तकहांहिं ॥१२॥
भये इकवीस सु नो अब और । विभेद त्रियं परिनामिक ठौर ॥

सुजीवित भव्यत और अभव्व । तरेपन एम भने जिन सव्व ॥१३॥
तिन्होंमँह केतक त्यागनजोग । कितेक गहेतैं मिटै भवरोग ॥
कह्यो इनआदि लह्यो फिर मोख । अनंतगुनातममंडित चोख॥१४॥
जजों तुमपाय जपौं गुनसार । प्रभू हमको भवसागरतार ॥
गही शरनागत दीनदयाल । विलम्ब करो मति हे गुनमाल ॥ १५॥

छंद घत्तानंद ।

जै जै भवभंजन जनमनरंजन, दयाधुरंधर कुमतिहरा ॥
वृन्दावनवंदत मनआनंदित, दीजे आतमज्ञानवरा ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशंभवजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद अरिल्ल ।

जो बांचै यह पाठ सरस शंभवतनों ।
सो पावै धनधान्य सरस संपति घनो ॥

सकलपाप छै जाय सुजस जगमें बढ़ै ।
पूजत सुरपद होय अनुक्रम शिवचढ़ै ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वाद ।

श्रीअभिनंदनजिनपूजा ।

छंद मदाविलिप्तकपोल ।

अभिनन्दन आनन्दकन्द, सिद्धारथनन्दन ।
संवरपिता दिनन्द चन्द, जिहिं आवत वन्दन ॥
नगर अजोध्या जनम इन्द, नागिंद जु ध्यावै ।
तिन्हें जजनके हेत थापि, हम मंगल गावैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक ।

छंद गीता, हरिगीता, तथा रूपमाला ।

पदमद्रहगत गंगचंग, अभंग, धार सुधार है ।
कनकमणिगनजड़ित झारी, द्वारधार निकार है ॥
कलुषतापनिकंद श्रीअभिनंद, अनुपमचंद है ।
पदवंद वृंद जजे प्रभु, भवदंदफंदनिकंद है ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदनजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपामि ॥

शीतचंदन कदलिनन्दन, सुजलसंग घसायकैं ।
है सुगंध दशोंदिशामैं, भमैं मधुकर आयकैं ॥ क० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि ॥

हीरहिमशशिफेनमुक्ता, सरिस तन्दुल सेत हैं ।
तासको ढिग पुंज धारौं, अछय पदके हेत हैं ॥ क० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय अक्षतान् निर्वपामि ॥

समरसुभटनिघटनकारन, सुमन सुमनसमान हैं।
सुरभितैं जापैं करैं झंकार, मधुकर आन हैं॥ क०॥ ४॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥

सरस ताजे नव्य गव्य मनोज्ञ, चितहर लेयजी।
छुधाछेदन छिमाछितिपतिके, चरन चरचेयजी॥ क०॥ ५॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०॥

अततततममर्दनकिरनवर, बोधभानुविकाश है।
तुम चरनढिग, दीपक धरों, मोहि होहु स्वपरप्रकाश हैं॥ क०॥ ६॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०॥

भूर अगर कपूर चूर सुगंध, अगिनि जराय है॥
सब करमकाष्ट सुकाष्टमैं मिस, धूमघूम उड़ाय है॥ क०॥ ७॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

आँम निंबु सदा फलादिक, पक्क पावन आनजी ।

मोक्षफलके हेत पूजौं, जोरिकै जुगपानजी ॥ क० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥

अष्टद्रव्य सँवारि सुंदर, सुजस गाय रसाल ही ।

नचत रचत जजों चरनजुग, नाय नाय सुभाल ही ॥ क० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनंदनजिनेन्द्रायअनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥

पंचकल्याणक ।

छंद हरिपद ।

शुकलछट्ट वयशाखविषै तजि, आये श्रीजिनदेव ।

सिद्धारथमाताके उरमें, करै सची शुचि सेव ॥

रतनवृष्टि आदिक वर मंगल, होत अनेकप्रकार ।
ऐसे गुननिधिकों मैं पूजौं, ध्यावों बारंबार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामि इति स्वाहा ॥ १ ॥

माघशुकलतिथि द्वादशिके दिन, तीनलोकहितकार ।
अभिनन्दन आनंदकंद तुम, लीन्हों जगअवतार ॥

एक महूरत नरकमाहिं हू, पायो सब जिय चैन ।
कनकवरन कपि जिह्नधरनपद, जजों तुमैं दिनरैन ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

साढे छत्तिसलाख सुपूरव, राजभोग वर भोग ।
कछु कारन लखि माघशुकल, द्वादशिकों धार्‌यो जोग ॥

षष्टम नेम समापत करि लिय, इंद्रदत्तघर छीर।
जय धुनि पुष्प रतन गंधोदक, वृष्टि सुगंध समीर ॥ ३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लद्वादश्यां दीक्षाकल्याणप्राप्ताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पौष शुकल चौदशिको घाते, घातिकरमदुखदाय।
उपजायो वरबोध जासको, केवल नाम कहाय ॥
समवसरन लहि बोधिधरम कहि, भव्यजीवसुखकंद।
मोकों भवसागरतैं तारो, जय जय जय अभिनन्द ॥४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लचतुर्दश्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

जोगनिरोध अघातिघाति लहि, गिरसमेदतैं मोख।
माससकल सुखराश कहे, वैशाखशुकल छठ चोख ॥

चतुरनिकाय आय तित कीनो, भगतभाव उमगाय ।

हम पूजैं इत अरघ लेय जिमि, विघनसघन मिट जाय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लषष्ठीदिने मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीअभिनंदनजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

तुंग सु तन धनु तीनसौ, औ पचास सुखधाम ।
कनकबरन अवलोकिकैं, पुनि पुनि करूं प्रणाम ॥ १ ॥

छंद लक्ष्मीधरा ।

सच्चिदानंद सद्ज्ञान सद्दर्शनी । सत्स्वरूपा लई सत्सुधासर्सनी ॥
सर्वआनन्दकंदा महादेवता । जास पादाब्ज सेवैं सबै देवता ॥२॥
गर्भ औ जन्मनिःकर्मकल्यानमें । सत्त्वको शर्म पूरे सबै थानमें ॥

वंशइक्ष्वाकुमें आपु ऐसे भये। ज्यों निशाशर्दमें इंदु स्वच्छै ठये ॥३॥

लक्ष्मीवती छंद।

होत वैराग लौकांतसुर बोधियो।
फेरि शिविकासु चढि गहन निजसोधियो ॥
घाति चौघातिया ज्ञान केवल भयो।
समवसरनादि धनदेव तब निरमयो ॥ ४ ॥

एक है इन्द्रनीली शिला रत्नकी।
गोल साढेदशै जोजने जत्नकी ॥
चारदिशपैड़िका वीस हज्जार है।
रत्नके चूरका कोट निरधार है ॥ ५ ॥

कोट चहुँओर चहुँद्वार तोरन खँचे।
तास आगें चहूं मानथंभा रचे ॥

मान मानी तजै जास ढिग जायकैं ।
नम्रताधार सेवैं तुम्है आयकैं ॥ ६ ॥

छंद लक्ष्मीधरा ।

बिंब सिंहासनोंपैं जहाँ सोहहीं । इंद्रनागेन्द्र केते मनै मोहहीं ।
वापिका बारिसों जत्र सोहै भरी । जासमें न्हात ही पाप जावै टरी ॥७॥
तास आगें भरी खातिका बारसों । हंस सूआदि पंखी रमैं प्यारसों ॥
पुष्पकी वाटिका बागवृच्छें जहां । फूल औ श्रीफलें सर्वही हैं तहां ॥८॥
कोट सौवर्णका तास आगें खड़ा । चार दर्वाजचौंओर रत्नों जड़ा ॥
चार उद्यान चारोंदिशामें गना । है धुजापंक्ति औ नाटशाला बना ॥६॥
तासु आगें त्रितीकोट रूपामयी । तूप नौ जास चारों दिशामें ठयी ॥
धाम सिद्धांतधारीनके हैं जहां । औ सभाभूमि है भव्य तिष्ठै तहां ॥१०॥
तास आगें रची गंधकूटी महा । तीन है कट्टिनी सारशोभा लहा ॥

एकपैं तो निधैं ही भरी रूयात हैं। भव्यप्रानी तहां सौं सबैं जात हैं ॥११॥
दूसरी पीठपै चक्रधारी गमै। तीसरे प्रातिहार्यैं लसै भागमें ॥
तासपैं वेदिका चार थंभानकी। है बनी सर्वकल्यानके खानकी ॥१२॥
तासपैं है सुसिंघासनं भासनं। जासपैं पद्म प्राफुल्ल है आसनं ॥
तासुपैं अंतरीक्षं विराजै सही। तीनछत्रे फिरं शीसरहे गही ॥१३॥
वृक्ष शोकापहारि अशोकं लसै। दुंदुभीनाद औ पुष्प खंते खसैं।
देहकी ज्योतिसों मंडलाकार है। सात भौ भव्य तामें लखै सार हैं ॥१४॥
दिव्यवानी खिरै सर्वशंका हरै। श्रीगनाधीश झेलैं सुशक्ति धरै ॥
धर्मचक्री तुही कर्मचक्री हने। सर्वशक्री नमैं मोदधारे घने ॥ १५ ॥
भव्यको बोधिसम्मेदतैं त्यो गगे। तत्र इंद्रादि पूजे सुभक्तीमगे ॥
हे कृपासिंधु मोपैं कृपा धारिगे। घोरसंसारसों शीघ्र मो तारिगे ॥१६॥

छन्द घत्तानन्द ।

जै जै अभिनन्दा आनँद कन्दा, भवसमुद्रवर पोत इवा ।
भ्रमतमशतखंडा, भानुप्रचंडा, तारि तारि जगरैनदिवा ॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीअभिनन्दनजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छन्द कवित्त ।

श्रीअभिनन्दन पापनिकन्दन तिनपद जो भवि जजै सुधार ।
ताके पुन्नभानु वर उग्गै दुरिततिमिर फाटै दुखकार ॥
पुत्र मित्र धनधान्य कमल यह विकसै सुखद जगतहित प्यार ।
कछुक कालमें सो शिव पावै, पढ़ै सुने जिन जजै निहार ॥१८॥

इत्याशीर्वाद ।

सुमतिनाथपूजा ।

छन्द रूपक मात्रा ३१ ।

संजमरतनविभूषनभूषित, दूषनवर्जित श्रीजिनचन्द ।
सुमतिरमारंजन भवभंजन, संजयन्त तजि मेरुनरिंद ॥
मातुमंगला सकलमंगला, नगर विनीता जये अमन्द ।
सो प्रभुदयासुधारसगर्भित आय तिष्ठ इत हरि दुखदन्द ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक ।

छन्द कवित्त तथा कुसुमलता भी कहाता है ।

पंचमउदधितनों सम उज्ज्वल, जल लीनों वरगन्ध मिलाय ।
कनककटोरीमांहिं धारिकरि, धार देहुं सुचि मनवचकाय ॥

हरिहरवंदित पापनिकंदित, सुमतिनाथ त्रिभुवनके राय।
तुमपदपद्म सद्मशिवदायक, जजत मुदितमन उदित सुभाय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि ॥

मलयागर घनसार घँसौं वर, केशर अर करपूरमिलाय।
भवतपहरन चरन परवारों, जनमजरामृततापपलाय ॥ हरि० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि ॥

शशिसमउज्जल सहितगंधतल, दोनों अनी शुद्ध सुखदास।
सो लै अखयसंपदाकारन, पुंज धरों, तुमचरननपास ॥ हरि० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि ॥

कमलकेतुकी बेल चमेली, करना अरु गुलाब महकाय।
सो लै समरशूलक्षैकारन, जजों चरन अति प्रीत लगाय ॥ हरि० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥

नव्य गव्य पकवान बनाऊं, सुरस देखि दृगमन ललचाय।

सो लै छुधारोगछयकारण, धरौं चरणढिग मनहरषाय ॥ हरि० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥

रतनजड़ित अथवा घृतपूरित, वा कपूरमय जोति जगाय ।

दीप धरों तुम चरननआगें, जातैं केवलज्ञान लहाय ॥ हरि० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि अगिनिमें देत जराय ।

अष्टकरम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम धूम यह तासु उड़ाय ॥ हरि० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

श्रीफल मातुलिंग वर दाड़िम, आम निंबु फल प्रासुकलाय ।

मोछमहाफल चाखन कारन, पूजत हों तुमरे जुग पाय ॥हरि०॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामि ॥

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप फल सकल मिलाय ।

नाचि राचि शिरनाय समरचौं, जय जय जय जय जय जिनराय ।ह० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामि ॥

पंचकल्याणक

रूप चौपाई ।

संजयंत तजि गरभ पधारे । सावनसेतदुतिय सुखकारे ॥
रहे अलिप्त मुकुर जिमि छाया । जजों चरन जय जय जिनराया ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लद्वितीयादिने गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

चैतसुकलग्यारस कहँ जानों । जनमे सुमति सहित त्रयज्ञानों ॥
मानों धर्यौ धरम अवतारा । जजों चरनजुग अष्टप्रकारा ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

चैतसुकलग्यारस तिथि भाखा । तादिन तप धरि निजरस चाखा ॥
पारन पद्मसद्मपय कीनों । जजत चरन हम समता भीनों ॥३॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां तपमङ्गलमंडिताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अघ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुकलचैतएकादशि हाने । घाति सकल जे जुगपति जाने ।
समवसरनमहँ कहि वृषसारं । जजहुं अनंतचतुष्टयधारं ॥४॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

चैतसुकलग्यारस निरवानं ।गिरिसमेदतैं त्रिभुवनमानं ।
गुनअनंत निज निरमलधारी । जजों देव सुधि लेहु हमारी ॥५॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीसुमतिजिनेन्द्रायार्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला।

दोहा।

सुमति तीनसौ छत्तिसो, सुमतिभेद दरसाय।
सुमति देहु विनती करौं, सुमति विलम्ब कराय[1] ॥१॥
दयावेलि तहँ सुगुननिधि, भविक-मोद गम चंद॥
सुमतिसतीपति सुमतिकों, ध्यावों धरि आनंद ॥२॥
पंच परावरतन हरन, पंचसुमति सित दैन॥
पंचलब्धिदातारके, गुन गाऊं दिनरैन ॥ ३॥

छंद भुजंगप्रयात।

पिता मेघराजा सबै सिद्धकाजा। जपें नाम जाकोसबै दुःख भाजा।
महासूर इक्ष्वाकवंशी विराजै। गुणग्राम जाको सबै ठौर छाजै ॥४॥

---

१ इस दोहेमें जमकालंकार है।

तिन्होंके महापुण्यसों आप जाये। तिहूंलोकमें जीव आनंद पाये ॥
सु नासीर[1] ताही घरी मेरु धायो। क्रिया जन्मकी सर्व कीनी यथा यों ॥
बहुत्सातकों सोंपि संगीत कीनों। नमें हाथ जोरौं भलीभक्तिभीनों ॥
विताई दश लाख हीपूर्बबालै[2]। प्रजा लाख उन्तीस ही पूर्व पालै ॥६॥
कछू हेतुतैं भावना बार भाये। तहाँ ब्रह्मलौकांतके देव आये ॥
गये बोधि ताही समै इन्द्र आयो। धरे पालकीमें सु उद्यान ल्यायो।७।
नमें सिद्धको केशलोंचे सबै ही। धर्यो ध्यान शुद्धंजु घाती हने ही ॥
लह्यो केवलं औ समोसर्न साजं। गणाधीश जु एकसौ सोल राजं॥८॥
खिरैं शब्द तामैं छहों द्रव्यधारे। गुनौपर्ज उत्पादव्ययैध्रौव्य सारे ॥
तथा कर्म आठों तनी तित्थि गाजं। मिलै जासुके नाशतें मोच्छराजं ॥
धरैं मोहिनी सत्तरं कोड़कोड़ी। सरित्पत्प्रमाणं थितिं दीर्घजोड़ी ॥

१ इंद्र। २बालकपनमें।

अवज्ञानदृग्वेदिनी अंतराय । धरें तीसकोड़ाकुडी सिंधुकायं ॥१०॥
तथा नामगीतं कुड़ाकोड़ि वीसं । समुद्रप्रमाणं धरें सत्ताईसं ।
सु तैं तीसअब्धिं धरें आयु अब्धिं । कहें सर्वकर्मांतनी वृद्धलब्धिं ॥११॥
जघन्यप्रकारै धरैं भेद ये ही । मुहूर्त्तं वसू नामगोतं गने ही ।
तथा ज्ञान दृग्मोह प्रत्यूह आयं । सुअन्तर्मुहूर्त्तं धरैं थित्ति गायं ॥१२॥
तथा वेदिनी बारहैं ही मुहूर्त्तं । धरैं थित्त ऐसें भन्यो न्यायजुत्तं ।
इन्हैं आदि तत्वार्थ भाव्यो अशेसा । लह्यो फेरि निर्वानमाहीं प्रवेसा ॥१३॥
अनंतं महंतं सुसंतं सुतंतं । अमंदं अफंदं अनंदं अभंतं ।
अलक्षं विलक्षं सुलक्षं सुदक्षं । अनक्षं अवक्षं अभक्षं अतक्षं ॥१४॥
अवर्णं अघर्णं अमर्णं अकर्णं । अभर्णं अतर्णं अशर्णं सुशर्णं ।
अनेकं सदेकं चिदेकं विवेकं । अखंडं सुमंडं प्रचंडं तदेकं ॥१५॥
सुपर्मं सुधर्मं सुशर्मं अकर्मं । अनंतं गुनाराम जैवन्त धर्मं ।

ममैं दास वृंदावनं शर्न आई । सबै दुःखतैं मोहि लीजै छुड़ाई। १६ ।

छंद घत्तानंद

तुव सुगुन अनन्ता ध्यावत संता, भ्रमतमभंजनमार्तंडा ।
सतमतकरचंडा भवि-कजमंडा, कुमतिकुबल इन गन हंडा ॥१७॥

ॐ ह्रीं सुमतिजिनेंद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद रोड़क ।

सुमतिचरन जो जजै, भविक जन मनवचकाई ।
तासु सकलदुखदंद फंद, ततछिन छय जाई ॥
पुत्रमित्र धन धान्य, शर्म अनुपम सो पावै ।
वृन्दावन निर्वान, लहै जो निहचै ध्यावै ॥ १८ ॥

इत्याशीर्वाद ।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

इति सुमतिजिनपूजा समाप्त ।

पद्मप्रभजिनपूजा ।

छंद रोड़क (मदाविलिप्तकपोल)।

पदमरागमनिवरनधरन, तनतुंग अढ़ाई ।
शतक दंड अघखंड, सकल सुर सेवत आई ॥
धरनि तात विख्यात सुसीमाजूके नंदन ।
पदमचरन धरि राग सु थापों इतकरि वन्दन ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र । अत्र अवतर अवतर । संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट्।

अष्टक ।

चाल होलीकी–ताल जत्त ।

पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसों ॥ टेक ॥

गंगाजल अति प्रासुक लीनों, सौरभ सकल मिलाय ।।
मनवचतन अयधार देत ही, जनमजरामृत जाय ।
पूजों भावसों, श्रीपदमनाथपद सार, पूजों भावसों ।।१।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निवपामि ।।

मलयागर कपूर चंदन घँसि, केशररंग मिलाय ।
भवतपहरन चरनपर वारों, मिथ्यातापमिटाय ।। पू० ।।२।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामि ।।

तंदुल उज्जल गंधअनीजुत, कनकथार भर लाय ।
पुंज धरों तुव चरनन आगैं, मोहि अखयपद दाय ।। पू० ।।३।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि ।।

पारिजात मंदार कलपतरुजनित, सुमन शुचि लाय ।
समरशूल निरमूलकरनकों, तुम पद पद्म चढ़ाय ।।पू० ।।४।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ।।

घेवर बावर आदि मनोहर, सद्य सजे शुचिभाय।
छुधा रोगनिर्नाशन कारन, जजों हरष उर लाय ॥पू०॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥

दीपकजोति जगाय ललित वर, धूमरहित अभिराम।
तिमिरमोह नाशनके कारन, जजों चरन गुनधाम ॥पू०। ६॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥

कृष्णागर मलयागर चंदन, चूर सुगंध बनाय।
अगिनमाहिं जारों तुम आगें, अष्टकरम जरि जाय॥पू०॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामि ॥

सुरस-वरन रसना मनभावन, पावन फल अधिकार।
तासों पूजों जुगम चरन यह, विघन करमनिरवार ॥पू०॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्रायमोक्षफलप्राप्तये फलंनिर्वपामि ॥

जल फल आदिमिलाय गाय गुन, भगतभाव उमगाय।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर, आवागमन मिटाय॥पू०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामि॥

पंचकल्याणक

छंद द्रुतविलंबित तथा सुंदरि (मात्रा १६)।

असित माघ सु छट्ट बखानिये। गरभमंगल तादिन मानिये॥
उरधग्रीवकसौं चय राजजी। जजत इंद्र जजैं हम आजजी॥१॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णषष्ठीदिने गर्भावतरणमंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा॥ १॥

सुकलकार्तिकतेरसकों जये। त्रिजगजीव सु आनँदकों तये॥
नगर स्वर्गसमान कुसंबिका। जजतु हैं हरिसंजुत अंबिका ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सुकलतेरसकातिक भावनो । तप धर्‌यो वनषष्टम पावनो ॥
करत आतमध्यान धुरंधरो । जजत हैं हम पाप सबै हरो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लत्रयोदश्यां निःक्रमणकल्याणकप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुकलपूनमचैत सुहावनी । परमकेवल सो दिन पावनी ॥
सुरसुरेश नरेश जजैं तहाँ । हम जजैं पदपंकजको इहाँ ॥४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय ।अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

असित फागुन चौथ सुजानियो । सकलकर्ममहा हारिपुनय ।
गिरिसमेदथकी शिवको गये । हम जजैं पद ध्यानविषैं लये । ५ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्थीदिने मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

छंन्द घत्तानंद ।

जय पद्मजिनेशा शिवसद्मेशा, पादपद्म जजि पद्मेशा ।
जय भवतमभंजन मुनिमनकंजन,-रंजनको दिवसाधेशा ॥१॥

छंद रूपचौपाई ।

जय जय जिन भविजनहितकारी । जय जय जिन भव सागरतारी ॥
जय जय समवसरन धनधारी । जय जय वीतराग हितकारी ॥२॥
जय तुम साततत्त्वविधि भाख्यौ । जय जय नवपदार्थ लखि आख्यौ
जय षटद्रव्य पंच जुतकाया । जय सबभेदसहित दरशाया ॥३॥
जय गुन थान जीव परमानो । जय पहिले अनंत जिय जानो ॥

नय दूजे शासादनमाहीं । तेरहकोड़ि जीवथित आंहीं ॥ ४ ॥
जय तीजे मिश्रित गुणथाने । जीव सु बावनकोड़ि प्रमाने ॥
जय चौथे अविरति गुन जीवा । चारअधिक शतकोड़ि सदीवा ॥ ५ ॥
जय जिय देशवरतमें शेषा । कौड़ि सातसौ हैं थिति वेशा ॥
जय प्रमत्त पटशून्य दोय वसु । पांच तीन नव पांच जीव लसु । ६ ॥
जय जय अपरमत्तगुन कोरं । लच्छ छानवै सहस बहोरं ॥
निन्यानवे एकशत तीना । ऐते मुनि तित रहहिं प्रवीना ॥ ७ ॥
जय जय अष्टममें दइ धारा । आठशतक सत्तानों सारा ॥
उपशममें दुइसो निन्यानों । छपकमाहिं तसु दूने जानों ॥ ८ ॥
जय इतने इतने हितकारी । नवें दशें जुगश्रेणी धारी ॥
जय ग्यारें उपशमगामी । दुइसै निन्यानों अध आमी ॥ ६ ॥
जय जय छीनमोह गुनथानों । मुनि शतपांचअधिक अठानों ॥

जय जय तेरहमें अरहंता । जुग नभ पन वसु नव वसु तंता ॥ १० ॥
एते राजतु हैं चतुरानन । हम वंदै पद थुतिकरि आनन ॥
हैं अजोग गुनमें जे देवा । पनसोठानों करों सुसेवा ॥ ११ ॥
तित तिथि अइउऋलृ लघु भाषत । करि थिति फिर शिवआनँद चाखत ।
ए उतकृष्ट सकलगुण थानी । तथा जघन मध्यम जे प्रानी ॥ १२ ॥
तीनों लोकसदनके वासी । निज गुनपरजभेदमय राशी ॥
तथा और द्रव्यनके जेते । गुनपरजाय भेद हैं तेते ॥ १३ ॥
तीनों कालतने जु अनंता । सो तुम जानत जुगपत संता ॥
सोई दिव्यवचनके द्वारे । दै उपदेश भविक उद्धारे ॥ १४ ।
फेरि अचलथलवासा कीनों । गुन अनंत निजआनँद भीनों ॥
चरमदेहतें किंचित ऊनो । नरआकृति तिति हैं नित गूनो । १५ ॥
जय जय सिद्धदेव हितकारी । वार वार यह अरज हमारी ।

मोकों दुखसागरतें काढ़ो । वृंदावन जांचतु हैं ठाढ़ो ॥ १६ ॥

छंद घत्ता ।

जय जय जिनचंदा पद्मानंदा, परमसुमतिपद्माधारी ॥
जय जनहितकारी दया विचारी, जय जय जिनवर अधिकारी ॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद रोड़क

जजत पद्मपदपद्म सद्म ताके सुपद्म अत ।
होत वृद्ध सुतमित्र सकल आनंदकंद शत ॥
लहत स्वर्गपदराज, तहाँतें चय इत आई ।
चक्रीको सुख भोगि, अंत शिवराज कराई ॥ ८ ॥

इत्याशीर्वादः

इतिश्रीपद्मप्रभजिनपूजा समाप्त ।

सुपार्श्वनाथजिनपूजा

छंद हरिगीता तथा गीता।

जय जय जिनिंद गनिंद इंद, नरिंद गुन चिंतन करै।
तन हरीहर मनसम हरत मन, लखत उर आनँद भरै॥
नृप सुपरतिष्ठ वरिष्ठ इष्ट, महिष्ट शिष्ट पृथी प्रिया।
तिन नंदके पद वंद वृन्द, अमंद थापतु जुतक्रिया॥ १॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट्॥ १॥
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः॥ २॥
ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्र ममसन्निहितो भव भव। वषट्॥ ३॥

चाल द्यानतरायजीकृत सोलहकारणभाषाष्टककी।

तुम पद पूजों मनवचकाय, देव सुपारस शिवपुरराय।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो॥

उज्जल जल शुचि गंध मिलाय, कंचनझारी भरकर लाय।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निवपामि ॥

मलयागरचंदन घँसि सार, लीनो भवतपभंजनहार ।
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो ॥ तुम० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशाय चंदनं निर्वपामीति ॥ २ ॥

देवजीर सुखदास अखंड । उज्जल जलछालित सित मंड ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति ॥ ३ ॥

प्रासुक सुमन सुगंधित सार । गुंजत अलि मकरध्वजहार ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो । तुम० ॥ ४ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

छुधाहरन नेवज वर लाय। हरों वेदनी तुम्हें चढ़ाय ॥
दयानिधि हो, जय जगबंधुदयानिधि हो। तुम० ॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविध्वंसनाय चरुं निर्वपामीति ॥ ५ ॥

ज्वलित दीप भरकरि नवनीत। तुमढिग धारतु हों जगमीत ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो। तुम० ॥ ६ ॥
ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

दशविधि गंध हुताशनमाहिं। खेवत क्रूर करम जरि जाहिं ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो। तुम० ॥ ७ ॥
ॐ ह्री श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति॥ ७ ॥

श्रीफल केला आदि अनूप। लै तम अग्र धरों शिवभूप ॥
दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो। तुम० ॥ ८ ॥
ॐ ह्री श्रीसुपासर्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निवपामीति ॥८॥

आठों दरबसाजि गुनगाय। नाचत राचत भगति बढ़ाय ॥

दयानिधि हो, जयजगबंधु दयानिधि हो। तुम० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक

छंद द्रुतविलंबित तथा सुंदरी (वर्ण १२)।

सुकलभादवछट्ठ सुजानिये। गरभमंगल तादिन मानिये ॥
करत सेव सची रचि मातकी। अरघ लेय जजों वसु भांतिकी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाषष्ठिदिने गर्भमंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

सुकलजेठदुवादशि जन्मये। सकल जीव सु आनँद तन्मये ॥
त्रिदशराज जजें गिरिराजजी। हम जजैं पद मंगल साजजी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

जनमके तिथ श्रीधरनें धरी। तप समस्त प्रमादनकों हरी ॥
नृपमहेन्द्र दियो पय भावसों। हम जजैं इत श्रीपद चावसों ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लद्वादश्यां निःक्रमणकल्याणप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

भ्रमरफागुनछट्ट सुहावनों। परमकेवलज्ञान लहावनों ॥
समवसर्नविषैं वृष भाखियो। हम जजैं पद आनंद चाखियो ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णपष्ठिदिने ज्ञानसाम्राज्यपदप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अघ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

असितफागुणसाँतयै पावनों। सकलकर्म कियो छय भावनों।
गिरिसमेदथकी शिव जातु हैं। जजत ही सब विघ्न विलातु हैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तमीदिने मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला

दोहा।

तुंग अंग धनु दोयसो, शोभा सागरचंद।
मिथ्यातपहर सुगुनकर, जय सुपास सुखकंद ॥१॥

छंद कामिनीमोहन (२० मात्रा।)

जाति जिनराज शिवराजहितहेत हो।
परमवैरागआनंद भरि देत हो॥
गर्भके पूर्व षटमास धनदेवने।
नगर निरमापि वाराणसी सेवने॥२॥
गगनसों रतनकी धार बहु वरषहीं।
कोड़ि त्रैअर्द्ध त्रैवार सब हरषहीं॥

तातके सदन गुनवदन रचना रची ।
मातुकी सर्वविधि करत सेवा सची ॥ ३ ॥
भयो जब जनम तब इन्द्रआसन चल्यो ।
होय चकित तुरित अवधितैं लखि भल्यो ॥
सप्त पग जाय शिर नाय वंदन करी ।
चलन उमग्यो तबै मानि धनि धनि घरी ॥ ४ ॥
सात विधि सैन गज वृषभ रथ बाज लै ।
गंधरव निरतकारी सबै साज लै ॥
गलितमदगंड ऐरावती साजियो ।
लक्षजोजन सु तन वदन सत राजियो ॥ ५ ॥
वदन वसुदंत प्रतिदंत सरवर भरे ।
तासुमधि शतकपनवीस कमलिनि खरे ॥

कमलनी मध्य पनवीस फूले कमल ।
कमलप्रति कमलमहँ एकसौ आठदल ॥ ६ ॥

सर्वदल कोड़शलवीस परमान जू ।
तासुपर अपछरा नचहिं जुतमान जू ॥
तततता तततता चितता लाथई ।
धृगतता धृगतता धृगततामें लई ॥ ७ ॥
धरत पग सनन नन सनन नन गगनमें ।
नूपुरें झनन नन झनन नन पगनमें ॥
नचत इत्यादि कई भाँतिसौं मगनमें ।
केइ तित बजत बाजे मधुर पगनमें ॥ ८ ॥
केइ द्रम द्रम सुद्रम द्रम मृदंगनि धुनै ।
केइ झल्लरि झनन झंझनन झंझनै ॥

केइ सं सागृदि सं सागृदि सारंगि सुर ।
केइ बीनापटह वंसि बाजैं मधुर ॥ ९ ॥
केई तनननन तननन तानै पुरैं ।
शुद्ध उच्चारि सुर केइ पाठैं फुरैं ॥
केइ झुकि झुकि फिरैं चक्रसी भामनी ।
घुगततां घ्रुगतगत परम शोभा बनी ॥ १० ॥
केइ छिन निकट छिन दूर छिन थूल लघु ।
धरत वैक्रयकपरभावसों तन सुभगु ॥
केइ करताल करलालतलमें धुनै ।
तत वितत घन सुखरि जात बाजे सुनै ॥ ११ ॥
इन्हें आदिक सकल साज सँग धारिकैं ।
आय पुर तीन फेरी करी प्यारकैं ॥

सचिय तब जाय परसूतथल मोदमें ।
मातु करि नींद लीनों तुम्हें गोदमें ॥ १२ ॥
आन गिरवाननाथहिं दियो हाथमें ।
छत्र अर चमर वर हरि करत माथमें ॥
चढ़े गजराज जिनराज गुन जापियो ।
जाय गिरिराजपांडुकशिला थापियो ॥ १३ ॥
लेय पञ्चमउदधिउदक करकर सुरनि ।
सुरन कलशनि भरे सहित चर्चित पुरनि ॥
सुहस अरु आठ शिर कलश ढारे जबैं ।
अघघ घघ घघघघघ भभभ भभ भौ तबैं ॥ १४ ॥
घधध धध धधध धध धुनि मधुर होत है ।
भव्यजनहंसके हरष उद्योत है ॥

भयै इमि न्हौन तब सकल गुन रंगमें ।

पोंछि श्रृंगार कीनों सची अंगमें ॥ १५ ॥

आनि पितुसदन शिशु सौंपि हरि थल गयो ।

बालवय तरुन लहि राजसुखभोगयो ॥

भोग तज जोग गहि चार अरिकों हने ।

धारि केवल परमधरम दुइविधि भने ॥ १६ ॥

नाशि अरि शेष शिवथानवासी भये ।

ज्ञानदृगशर्मवीरजअनंते लये ॥

सो जगतराज यह अरज उर धारियो ।

धरमके नंदको भवउदधि तारियो ॥ १७ ॥

छद घत्तानन्द ।

जय करुनाधारी शिवहितकारी, तारंनतरनजिहाजा हो ।

सेवक नित वंदै मनआनंदै, भवभयमेटनकाजा हो ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा ।

श्रीसुपार्श्वपदजुगल जो, जजै पढ़ै यह पाठ ।
अनुमोदै सो चतुर नर, पावै आनँद ठाठ ॥१९॥

इत्याशीर्वादाय पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

इति श्री सुपार्श्वजिनपूजा समाप्त ॥

श्री चन्द्रप्रभजिन पूजा ।

छप्पय—अनौष्ठ्य जमकालंकार तथा शब्दालंकार शान्तरस।

चारुचरन आचरन, चरन चितहरनचिहनचर ।
चंदचंदतनचरित, चंदथल चहत चतुर नर ॥
चतुक चंड चकचूरि, चारि चिदचक्र गुनाकर ।

चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर ॥
चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि ।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रचि रुचि ॥१॥

दोहा।

धनुष डेढसौ तुंग तन, महासेन नृपनंद ।
मातुलछमनाउर जये, थापों चंदजिनन्द ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौपट् ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक

चाल द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टककी अष्टपदी तथा होलीकी तालमें, तथा गरावा आदि अनेक चालोंमें।

गंगाहृदनिरमलनीर, हाटकभृंगभरा ।
तुम चरन जजों वरवीर, मेटो जनमजरा ॥
श्रीचंदनाथदति चंद, चरनन चंद लगै ।
मनवचतन जजत अमंद,--आतमजोति जगै ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि० ॥ १ ॥
श्रीखंडकपूर सुचंग, केशररंग भरी ।
घँसि प्रासुकजलके संग, भवआताप हरी ॥ श्री० ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि ॥ २ ॥
तंदुल सित सोमसमान, सम लय अनियारे ।
दिय पुंज मनोहर आन, तुमपदतर प्यारे ॥ श्री० ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामि ॥ ३ ॥
सुरद्रुमके सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै ।
तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामि ॥ ४ ॥

नेवज नानापरकार, इंद्रियबलकारी ।

सो लै पद पूजों सार, आकुलताहारी ॥ श्री०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामि ॥ ५ ॥

तमभंजन दीप सँवार, तुमढिग धारतु हौं ।

मम तिमिरमोह निरवार, यह गुन धारतु हौं ॥ श्री० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामि ॥ ६ ॥

दशगंधहुतासनमाहिं, हे प्रभु खेवतु हौं ।

मम करम दुष्ट जरि जाँहि, यातें सेवतु हौं ॥ श्री० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

अति उत्तमफल सु मंगाय, तुम गुनगावतु हौं ।

पूजों तन मन हरषाय, विघन नशावतु हौं ।श्री० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टमजिन मीत, अष्टम अवनी गमों ॥ श्री० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पंचकल्याणक ।

छंद तोटक (वर्ण १२)।

कलिपंचमचैत सुहात अली। गरभागममंगल मोद भली ॥
हरि हर्षित पूजत मातु पिता। हम ध्यावत पावत शर्मसिता ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णपञ्चम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कलि पौषइकादशि जन्म लयो। तब लोकविषै सुखथोक भयो ॥
सुर ईशजजें गिरशीश तबै। हम पूजत हैं नुतशीश अबै ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं पौपकृष्णैकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेंद्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा । कलिपौष इग्यारसि पर्व वरा ॥
निजध्यानविषै लवलीन भये। धनि सो दिन पूजत विघ्न गये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

वर केवलभानु उद्योत कियो । तिहुं लोकतणों भ्रम मेट दियो ॥
कलि फाल्गुनसप्तमी इन्द्र जजे ॥ हम पूजहिं सर्व कलंक भजे ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णसप्तम्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

सित फाल्गुण सप्तमि मुक्ति गये ।। गुणवंत अनंत अबाध भये
हरि आय जजें तित मोदधरे ॥ हम पूजत ही सब पाप हरे ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं नर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा ।

हे मृगांकअंकितचरण, तुम गुण अगम अपार ।
गणधरसे नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार ॥ १ ॥
पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय ।
तातैं गाऊं सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय ॥ २ ॥

छंद पद्धरि १६ मात्रा ।)

जय चन्द्र जिनेन्द्र दयानिधान । भवकानन हानन दवप्रमान ॥
जय गरभजनममंगल दिनन्द । भवि जीवविकाशन शर्मकंद ॥३॥
दशलक्षपूर्वकी आयु पाय । मनवांछित सुख भोगे जिनाय ॥
लखि कारण ह्वै जगतैं उदास । चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुखनिवास ॥४॥

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग। हरि शिविका सजि धरियो अभोग ॥
तापै तुम चढ़ि चिनचन्दराय। ताछिनकी शोभा को कहाय ॥ ५ ॥
जिन अंग सेत सित चमर ढार। सित छत्र शीस गलगुलकहार ॥
सित रतनजड़ित भूषण विचित्र। सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र ॥६॥
सित तन द्युति नाकाधीश आप। सित शिवका कांधे धरि सुचाप ॥
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व। सित चितमें चिन्तत जात पर्व ॥७॥
सित चंदनगरतैं निकसि नाथ। सित बनमें पहुंचे सकलसाथ ॥
सितशिलाशिरोमणि स्वच्छछाँह। सित तप तित धार्‌यो तुम जिनाह ॥
सित पयको पारण परमसार। सित चंद्रदत्त दीनों उदार ॥
सित करमें सो पयधार देत। मानों बांधत भवसिन्धुसेत ॥ ८ ॥
मानों सुपुण्यधारा प्रतच्छ। तित अचरज पन सुर किय ततच्छ ॥
फिर जाय गहन सित तपकरंत। सित केवलज्योति जग्यो अनन्त ॥

तहिं समवसरणरचना महान। जाके देखत सब पापहान ॥
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग। सब शोकतनो चूरै प्रसंग ॥ ११ ॥
सुर सुमनवृष्टि नभतैं सुहात। मनु मन्मथ तज हथियार जात ॥
बानी जिन मुखसौं खिरत सार। मनु तत्त्वप्रकाशन मुकुरधार॥१२॥
जहँ चौंसठ चमर अमर ढुरंत। मनु सुजस मेघझरि लगिय तंत॥
सिंहासन है जहँ कमलजुक्त। मनु शिवसरवरको कमलशुक्त॥१३॥
दुँदभि जित बाजत मधुर सार। मनु करमजीतको है नगार ॥
सिर छत्र फिरै त्रय श्वेतवर्ण। मनु रतन तीन त्रयताप हर्ण ॥१४॥
तन प्रभातनों मंडल सुहात। भवि देखत निजभव सात सात ॥
मनु दर्पणद्युति यह जगमगाय। भविजन भव मुख देखत सुआय।१५॥
इत्यादि विभूति अनेक जान। बाहिज दीसत महिमा महान ॥
ताको वरणत नहिं लहत पार। तौ अन्तरंग को कहै सार ॥१६॥

अनअंत गुणनिजुत करि विहार। धरमोपदेश दे भव्य तार ॥
फिर जोगनिरोधि अघाति हान। सम्मेदथकी लिय मुकतिथान॥१७॥
वृन्दावन वन्दत शीश नाय। तुम जानत हो मम उर जु भाय ॥
तातैं का कहौं सु बार बार। मनवांछित कारज सार सार ॥ १८ ॥

छंद घत्तानंद।

जय चन्दजिनंदा आनँदकंदा, भवभय भंजन राजै है ॥
रागादिकद्वंदा हरि सब फंदा, मुकुतिमांहि थिति साजैं हैं ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद चौबोला।

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचन्द जजैं ॥
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तसार सुख ताहि सजैं।२०।
जम के त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।

वृन्दावन ऐसो लखि पूजत, जातैं शिवपुरि राज रजैं ॥२१॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

इति श्रीचन्द्रप्रभजिनपूजा समाप्त ॥ ८ ॥

श्रीपुष्पदन्तजिनपूजा ।

छंद मदावलिप्तकपोल तथा रोडक (मात्रा २४) ।

पुष्पदंत भगवंत संत सुजपंत तंत गुन ।
महिमावंत महंत कंत शिवतियरमंत मुन ॥
काकंदीपुर जनम पिता सुग्रीवरमासुत ।
स्वेतवरन मनहरन तुम्हैं थापौं त्रिवार नुत ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

चाल हाली, ताल जत्त ।

मेरी अरज सुनीजे, पुष्पदन्त जिनराय, मेरी ॥ टेक ॥

हिमवनगिरिगतगंगाजलभर, कंचनभृंग भराय ।

करमकलंक निवारनकारन, जजों, तुम्हारे पाय ॥ मेरी० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

बावन चंदन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसाय ।

चरचों चरन हरन मिथ्यातप, वीतराग गुणगाय ॥ मेरी० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

शालि अखंडित सौरभमंडित, शशिसम द्युति दमकाय ।

ताको पुंज धरों चरननढिग, देहु अखयपद राय ॥ मेरी० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सुमन सुमनसम परिमलमंडित, गुंजतअलिगन आय ।

ब्रह्मपुत्रमदभंजनकारन, जजों तुम्हारे पाय ॥ मेरी० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवरबावर फेनी गोंझा, मोदन मोदक लाय ।

छुधावेदनीरोगहरनको, भेंट धरों गुणगाय ॥ मेरी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

बाति कपूर दीप कंचनमय, उज्वल ज्योति जगाय ।

तिमिर मोह नाशक तुमको लखि, धरों निकट उमगाय ॥ मेरी० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दशवर गंध धनंजयके संग, खेवत हौं गुन गाय ।

अष्टकर्म ये दुष्ट जरैं सो, धूम धूम सु उड़ाय ॥ मेरी० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्री फल मातुलिंग शुचि चिरभट, दाड़िम आम मँगाय ।

तासों तुमपदपद्म जजत हौं, विघनसघन मिटजाय ॥ मेरी० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल सकल मिलाय मनोहर, मनवचतन हुलसाय ॥
तुमपद पूजों प्रीति लायकै, जय जय त्रिभुवनराय ॥ मेरी० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक ।

छंद स्वयंभू (मात्रा ३२) ।

नवमीतिथिकारी फागुन भारी, गरभमांहिं थितिदेवा जी ।
तजि आरणथानं कृपानिधानं, करत सची तित सेवा जी ॥
रतननकी धारा परमउदारा, पर्यो व्योमतैं सारा जी ॥
मैं पूजों ध्यावौं भगतिबढ़ावौं, करो मोहि भवपारा जी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मँगसिर सितपच्छं परिवा स्वच्छं, जनमे तीरथनाथाजी ।
तब ही चवभेवा निरजर येवा, आय नये निजमाथा जी ॥
सुरगिरनह्वाये, मंगलगाये, पूजे प्रीत लगाई जी ।
मैं पूजों ध्यावौं भगतबढ़ावौं, निजनिधिहेत सहाई जी ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥
सित मँगसिरमासा तिथिसुखरासा, एकमके दिन धारा जी ।
तप आतमज्ञानी आकुलहानी, मौनसहित अविकारा जी ॥
सुरमित्र सुदानीके घरआनी, गो-पय-पारन कीना है ।
तिनको मैं वन्दों पापनिकंदों, जो समतारसभीना है ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लप्रतिपदि तपमङ्गलमण्डिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सितकातिक गाये दोइज घाये, घातिकरम परचंडा जी।
केवल परकाशे भ्रमतमनाशे, सकल सारसुख मंडा जी॥
गनराज अठासी आनँदभासी, समवसरणवृषदाता जी।
हरि पूजन आयो शीश नमायो, हम पूजैं जगताता जी॥ ४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ५॥

आसिन सित सारा आठैं धारा, गिरिसमेद निरवाना जी।
गुन अष्टप्रकारा अनुपम धारा, जै जै कृपा निधाना जी॥
तित इन्द्र सु आयौ पूज रचायौ, चिह्न तहां करि दीना है।
मैं पूजत हों गुन ध्याय महीसों, तुमरे रसमें भीना है॥ ५॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥५॥

जयमाला ।

दोहा ।

लच्छन मगर सुश्वेत तन, तुंग धनुष शतएक ॥
सुरनरवंदित मुकतपति, नमों तुम्हें शिरटेक ॥ १ ॥

पुहुपरदन गुनवदन है, सागरतोयसमान ॥
क्योंकर कर अंजुलिनकर, करिये तासु प्रमान ॥ २ ॥

छंद तामरस तथा नयमालिनी तथा चंडी मात्रा (मात्रा १६)

पुष्पदंत जयवंत नमस्ते । पुण्यतीर्थंकर संत नमस्ते ॥
ज्ञानध्यानअमलान नमस्ते । चिद्विलास सुखज्ञान नमस्ते ॥ ३ ॥
भवभयभंजन देव नमस्ते । मुनिगनकृतपदसेव नमस्ते ॥
मिथ्यानिशिदिनइंद्र नमस्ते । ज्ञानपयोदधिचन्द्र नमस्ते ॥ ४ ॥

भवदुखतरुनिःकंद नमस्ते । रागदोषमदह्नंद नमस्ते ॥
विश्वेश्वर गुनभूर नमस्ते । धर्मसुधारसपूर नमस्ते ॥ ५ ॥
केवलब्रह्मप्रकाश नमस्ते । सकल चराचरभास नमस्ते ॥
विघ्नमहीधर विज्जुनमस्ते । जय उरधगतिरिज्जु नमस्ते ॥ ६ ॥
जय मकराकृतपाद नमस्ते । मकरध्वजमदवाद नमस्ते ॥
कर्मभर्मपरिह्वार नमस्ते । जय जय अधमउधार नमस्ते ॥ ७ ॥
दयाधुरंधर धीर नमस्ते । जय जय गुनगंभीर नमस्ते ॥
मुक्तिरमनिपति वीर नमस्ते । ह्वरता भवभयपीर नमस्ते ॥ ८ ॥
व्ययउतपतिथितिधार नमस्ते । निजअधार अविकार नमस्ते ॥
भव्यभवोदधितार नमस्ते । वृन्दावननिसतार नमस्ते ॥ ९ ॥

घत्ता छंद (मात्रा ३२) ।

जय जय जिनदेवं हरिकृतसेवं, परमधरमधनधारी जी ॥

मैं पूजौं ध्यावौं गुनगन गावौं, मेटो विथा हमारी जी ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्तजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद मदावलिप्तकपोल ।

पुहुपदंतपद सन्त, जजैं जो मन वचकाई ।
नाचैं गावैं भगति करैं, शुभपरनति लाई ॥
सो पावैं सुख सर्व, इंद अहिमिंद तनों वर ।
अनुक्रमतैं निरवान, लहैं निहचैं प्रमोदधर ॥ ११ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

इति श्रीपुष्पदन्तजिनपूजा समाप्त ॥ ९ ॥

श्रीशीतलनाथ जिनपूजा

छंद मत्तमातंग तथा मत्तगयंद । (वर्ण २३)

शीतलनाथ नमो धरि हाथ, सुमाथ जिन्हों भवगाथ मिटाये ।

अच्युततैं च्युत मातसुनंदके, नंद भये पुरभद्दल आये ॥
वंश इक्ष्वाक कियौ जिनभूपित, भव्यनको भवपार लगाये ।
ऐसे कृपानिधिके पदपंकज, थापतु हौं हिय हर्ष बढ़ाये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठ ठः ।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक

छंद वसंततिलका (वर्ण १४) ।

देवापगा सुवरवारि विशुद्ध लायौ ।
भृंगार हेमभरि भक्ति हिये बढ़ायौ ॥
रागादिदोषमलमर्द्दनहेतु येवा ।
चर्चौं पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीखंडसार वर कुंकुम गारि लीनों ।
कंसंग स्वच्छ घसि भक्ति हिये धरीनों ॥ रा० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

मुक्तासमान सित तंदुल सार राजैं ।
धारंत पुंज कलिकुंज समस्त भाजैं ॥ रा० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

श्रीकेतकीप्रमुखपुष्प अदोष लायौ ।
नौरंग जंगकरि भृंग सुरंग पायौ ॥ रा० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

नैवेद्य सार चरु चारु सँवारि लायौ ।
जांबूनदप्रभृतिभाजन शीस नायौ ॥ रा० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

स्नेहप्रपूरित सुदीपक जोति राजै ॥
स्नेहप्रपूरित हिये जजतेऽघ भाजै ॥ रा० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

कृष्णागुरुप्रमुखगंध हुताशमाहीं ।
खेवों तवाग्र वसुकर्म जरन्त जाहीं ॥ रा० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

निम्बाम्र कर्कटि सु दाड़िम आदि धारा ।
सौवर्ण गंध फलसार सुपक्क प्यारा ॥ रा० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

कंश्रीफलादि वसु प्रासुकद्रव्य साजे ।
नाचे रचे मचत बज्जत सज्ज बाजे ॥ रा० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

छंद इंद्रवज्रा तथा उपेंद्रवज्रा (वर्ण ११)

आठैं वदी चैत सुगर्भ माहीं । आये प्रभू मंगलरूप थाहीं ।
सेवै सची मातु अनेक भेवा । चर्चों सदा शीतलनाथ देवा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जायो । भूलोकमें मंगलसार आयो ॥
शैलेन्द्रपै इन्द्र फनिन्द्र जज्जे । मै ध्यानधारों भवदुःख भज्जे ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

श्रीमाघकी द्वादशि श्याम जानों । वैराग्य पायो भवभाव हानों ॥
ध्यायो चिदानंद निवार मोहा । चर्चों सदा चर्न निवारि कोहा ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

चतुर्दशी पौषवदी सुहायो । ताही दिना केवललब्धि पायो ॥
शोभै समोसृत्य बखानिधर्मं । चर्चौं सदा शीतल पर्म शर्मं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

कुँवारकी आठयँ शुद्धबुद्धा । भये महामोक्षसरूप शुद्धा ॥
समेदतैं शीतलनाथस्वामी । गुनाकरं तासु पदं नमामी ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

छंद लोलतरंग (वर्ण ११) ।

आप अनंतगुनाकर राजैं । वस्तुविकाशन भानु समाजैं ॥

मैं यह जानि गही शरना है। मोहमहारिपुको हरना है ॥ १ ॥

दोहा।

हेमवरन तन तुंग धनु, नव्वै अति अभिराम।
सुरतरु अंक निहारि पद, पुन पुन करौं प्रणाम ॥२॥

छंद तोटक (वर्ण १२)

जय शीतलनाथ जिनंद वरं। भवदाघदवानल मेघझरं ॥
दुखभूभृतभंजन वज्रसमं। भवसागर नागर पोतपमं ॥ ३ ॥
कुहमानमयागदलोभहरं। अरि विघ्नगयंद मृगिंद वरं ॥
वृषवारिदवृष्टन सृष्टिहितू। परदृष्टि विनाशन सुष्टुपितू ॥ ४ ॥
समवस्रतसंजुत राजतु हो। उपमा अभिराम विराजतु हो ॥
वर बारहभेद सभाथितको। तित धर्म बखानि कियौ हितको ॥ ५ ॥
पहले मैं श्रीगनराज रजैं। दुतियेमैं कल्पसुरी जु सजैं ॥

त्रितिये गगनी गुनभूरि धरैं । चवथे तियजोतिष जोति भरैं ॥ ६ ॥
तिय विंतरनी पनमें गनिये । छहमें भुवनेसुर ती भनिये ॥
भुवनेश दशों थित सत्तम हैं । वसुमें वसुविंतर उत्तम हैं ॥ ७ ॥
नवमें नभजोतिष पंच भरे । दशमें दिविदेव समस्त खरे ॥
नरवृन्द इकादशमें निवसैं । अरु बारहमें पशु सर्व लसैं ॥ ८ ॥
तजि वैर प्रमोद धरैं सब ही । समतारसमग्न लसैं तब ही ॥
धुनि दिव्य सुनैं तजि मोहमलं । गनराज असी धरि ज्ञानबलं ॥६॥
सबके हित तत्त्व बखान करैं । करुनामनरंजित शर्म भरैं ॥
वरने षटदर्वतनें जितने । वर भेद विराजतु हैं तितने ॥ १० ॥
पुनि ध्यान उभै शिवहेत मुना । इक धर्म दुती सुकलं अधुना ॥
तित धर्म सुध्यानतणो गनियो । दशभेद लखे भ्रमको हनियो ॥११॥
पहलो अरि नाश अपाय सही । दुतियो जिनवैन उपाय गही ॥

त्रिति जीवविषै निजध्यावन है । चवथो सु अजीव रमावन है ॥१२॥
पनमों सु उदैबलटारन है । छहमों अरिरागनिवारन है ॥
भवत्यागनचिंतन ससम है । वसुमों जितलोभ न आतम है ॥१३॥
नवमों जिनकी धुनि सीस धरै । दशमो जिनभाषित हेत करै ॥
इमि धर्मतणो दशभेद भन्यो । पुनि शुक्लतणो चदु येम गन्यो ॥१४॥
सुपृथक्त वितर्कविचार सही । सुइकत्ववितर्कविचार गही ॥
पुनि सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात कही । विपरीतक्रियानिरवृत्त लही ॥१५॥
इन आदिक सर्व प्रकाश कियो । भवि जीवनको शिव स्वर्ग दियो ॥
पुनि मोच्छविहार कियो जिनजी । सुखसागर मग्न चिरं गुनजी ॥१६॥
अब मैं शरना पकरी तुमरी । सुधि लेहु दयानिधिजी हमरी ॥
भवव्याधि निवार करो अब ही । मति ढील करो सुख द्यो सब ही ॥

छंद घत्तानद ।

शीतलजिन ध्यावौं भगति बढ़ावौं, ज्यों रतनत्रयनिधि पावौं ।
भवदंद नशावौं शिवथल जावौं, फेर न भौवनमें आवौं ॥ १८ ॥

ॐ ह्री श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद मालनी ।

दिढ़रथसुत श्रीमान्, पंचकल्याणधारी ।
तिनपदजुगपद्मं, जो जजै भक्तिधारी ॥
सहसुख धनधान्यं, दीर्घ सौभाग्य पावै ।
अनुक्रम अरि दाहै, मोक्षको सो सिधावै ॥ १९ ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ।

इति श्रीशीतलनाथजिनपूजा समाप्त ॥ १० ॥

श्रीश्रेयांसनाथजिनपूजा ।

छंद रूपमाला तथा गीता ।

विमलनृप विमलासुअन, श्रेयांशनाथ जिनंद ॥
सिंघपुर जनमे सकल हरि, पूजि धरी आनंद ॥
भवबंधध्वंशनहेत लखि मैं, शरन आयो येव ॥
थापौं चरन जुग उर कमलमें, जजनकारन देव ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

छंद गीता तथा हरिगीता । (मात्रा २८)

कलधौतवरन उतंगहिमगिरिपदमद्रहतैं आवई ।
सुरसरित प्रासुक उदकसों भरी भृंग धार चढ़ावई ॥

श्रेयाँसनाथ जिनंद त्रिभुवनचंद आनँदकंद हैं ।
दुखदंदफंदनिकंद पूरनचंद जोति अमंद हैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गोशीर वर करपूर कुंकुम नीरसंग घसों सही ।
भवतापभंजनहेत भवदधिसेत चरन जजों सही ॥ श्रे० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामि ॥ २ ॥

सितशालि शशिदुति शुक्तिसुंदरमुक्तिकी उनहार हैं ।
भरि थार पुंज धरंत पदतर अखयपद करतार हैं ॥श्रे०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

सदसुमन सुमन समान पावन, मलयतें मधु झंकरैं ।
पदकमलतर धरतैं तुरिति सो मदन को मद खंकरैं ।श्रे०।४।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

यह परममोदकआदि सरस संवारि सुन्दर चरु लियो।
तुव वेदनीमदहरन लखि, चरचों चरन शुचिकरहियो ॥श्रे०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

संशयविमोहविभरमतमभंजन, दिनंदसमान हो।
तातैं चरनढिग दीप जोऊं देहु अविचलज्ञान हो ॥श्रे०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि० ॥६॥

वर अगर तगर कपूर चूर सुगंध भूर बनाइया।
दहि अमरजिह्वविषैं चरन ढिग करम भरम जराइया ॥श्रे०॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

सुरलोक अरु नरलोकके फल पक्व मधुर सुहावनें।
लै भगतसहित जजों चरन शिव परमपावन पावनें ॥श्रे०॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जलमलयतंदुलसुमनचरु अरु दीपधूपफलावली ।

करि अरघ चरचों चरनजुगप्रभु मोहि तार उतावली ॥श्रे० ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

पंचकल्याणक ।

छंद आर्या ।

पुष्पोत्तर तजि आये, विमलाउर जेठकृष्ण आठैंकों ।

सुरनर मंगल गाये, मैं पूजों नासि कर्मकाठैंकों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाष्टम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

जनमें फागुनकारी, एकादशि तीनग्यानदृगधारी ॥

इक्ष्वाकवंशतारी, मैं पूजों घोर विघ्न दुखटारी ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्या जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

भवतनभोग असारा, लख त्याग्यो धीर शुद्ध तपधारा ॥
फागुनवदि इग्यारा, मैं पूजों पाद अष्टपरकारा ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णैकादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

केवलज्ञान सुजानन, माघवदी पूर्णतित्थको देवा ।
चतुरानन भवभानन, वंदौं ध्यावौं करौं सुपदसेवा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

गिरिसमेदतैं पायो, शिवथल तिथि पूर्णमासि सावनको ।
कुलिशायुध गुनगायो, मैं पूजों आपनिकट आवनको ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

जयमाला ।

छंद लोलतरंग (वर्ण ११) ।

शोभित तुंग शरीर सुजानो । चाप असी शुभलच्छन मानौं ॥
कंचनवर्ण अनूपम सोहै । देखत रूप सुरासुर मोहै ॥ १ ॥

छंद पद्धड़ी (मात्रा १६)

जै जै श्रेयांस जिन गुनगरिष्ठ । तुमपदजुग दायक इष्टमिष्ट ॥
जै शिष्टशिरोमनि जगतपाल । जै भवसरोजगन प्रातकाल ॥ २ ॥
जै पंचमहाव्रतगजसवार । लै त्यागभावदलबल सु लार ॥
जै धीरजको दलपति बनाय । सत्ताछितिमहँ रनको मचाय ॥ ३ ॥
धरि रतन तीन तिहुँ शक्तिहाथ । दशधरमकवच तपटोप माथ ॥
जै शुकलध्यानकर खड़गधार । ललकारे आठौं अरि प्रचार ॥४॥
तामैं सबको पति मोहचंड । ताकों तत छिन करि सहस खंड ॥

फिर ज्ञानदरसप्रत्यूह हान । निजगुनगढ लीनों अचल थान ॥५॥
शुचि ज्ञान दरस सुख वीर्य सार । हुव समवसरणरचना अपार ॥
तित भाषे तत्त्व अनेक धार । जाकों सुनि भव्य हियें विचार ॥६॥
निजरूप लह्यो आनंदकार । भ्रम दूरकरनकों अति उदार ॥
पुनि नयप्रमाननिच्छेपसार । दरसायो करि संशयप्रहार ॥ ७ ॥
तामैं प्रमान जुग भेद एव । परतच्छ परोछ रजै सुमेव ॥
तामैं प्रतच्छके भेद दोय । पहिलो है संविवहार सोय ॥ ८ ॥
ताके जुगभेद विराजमान । मति श्रुति सोहैं सुंदर महान ॥
है परमारथ दुतियो प्रतच्छ । हैं भेद जुगम तामाहिं दच्छ ॥ ९ ॥
इक एकदेश इक सर्व देश । इकदेश उभैविधि सहित वेश ॥
वर अवधि सु मनपरजै विचार । है सकलदेश केवल अपार॥१०॥
चरअचर लखत जुगपत प्रतच्छ । निरद्वंदरहित परपंचपच्छ ।

पुनि है परोच्छमहँ पंच भेद। समिरति अरु प्रतिभिज्ञानवेद ॥११॥
पुनि तरक और अनुमान मान। आगमजुत पन अब नय बखान॥
नैगम संग्रह व्यौहार गूढ़। रिजुसूत्र शब्द अरु समभिरूढ़ ॥ १२ ॥
पुनि एवंभूत सु सस एम। नय कहे जिनेसुर गुन जु तेम ॥
पुनि दरवछेत्र अर काल भाव। निच्छेप चार विधि इमि जनाव॥१३॥
इनको समस्त भाख्यौ विशेष। जा समुझत भ्रम नहिं रहत लेश॥
निज ज्ञानहेत ये मूलमंत्र। तुम भाखे श्रीजिनवर सु तंत्र ॥१४॥
इत्यादि तत्त्वउपदेश देय। हनि शेषकरम निरवान लेय ॥
गिरवान जजत वसु दरब ईश। वृंदावन नितप्रति नमत सीश॥१५॥

घत्तानंद छंद।

श्रेयांस महेशा सुगुनजिनेशा, वज्र धरेशा ध्यावतु हैं।
हम निशिदिन वंदैं पापनिकंदैं, ज्यों सहजानँद पावतु हैं ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेंद्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सोरठा ।

जो पूजै मनलाय, श्रेयनाथपदपद्मको ॥
पावै इष्ट अघाय, अनुक्रमसौं शिवतिय वरै ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादाय पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इति श्रीश्रेयांसनाथजिनपूजा समाप्त ॥ ११ ॥

श्रीवासुपूज्य जिनपूजा

छंद रूपकवित्त ।

श्रीमतवासुपूज्य जिनवरपद, पूजनहेत हिये उमगाय ।
थापों मनवचतन शुचि करिकै, जिनकी पाटलदेव्या माय ॥
महिष चिह्न पद लसै मनोहर, लाल वरन तन समतादाय ।

सो करुनानिधि कृपादिष्टकरि, तिष्ठहु सुपरितिष्ठ यहँ आय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक

छंद जोगीरासा । आंचलीबंध "जिनपदपूजों लवलाई ॥ "

गंगाजल भरि कनककुंभमैं, प्रासुक गंध मिलाई ।
करम कलंक विनाशन कारन, धार देत हरषाई ॥ जिनपद० ॥
वासुपूज वसुपूजतनुजपद, वासव सेवत आई ।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सनमुख धाई ॥ जिन० ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीवासपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

कृष्णागरु मलयागिर चन्दन, केशरसंग घसाई ।

भवआताप विनाशनकारन, पूजों पद चित लाई ॥ चा० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

देवजीर सुखदास शुद्ध वर, सुवरनथार भराई ।
पुंजधरत तुम चरननआगें, तुरित अखय पदपाई ॥ चा० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३

पारिजात संतानकल्पतरु,—जनित सुमन बहु लाई ।
मीनकेतुमदभंजनकारन, तुम पदपद्म चढाई ॥चा०॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्व० ॥ ४ ॥

नव्यगव्यआदिकरसपूरित, नेवज तुरित उपाई ।
छुधारोग निरवारनकारन, तुम्हें जजों शिरनाई ॥ चा० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० ॥ ५ ॥

दीपकजोत उदोत होत वर, दशदिशमें छवि छाई ।

तिमिरमोहनाशक तुमको लखि, जजों चरन हरषाई ॥ वा० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६

दशविध गंधमनोहर लेकर, वातहोत्रमें डाई ।

अष्ट करम ये दुष्ट जरतु हैं, धूम सु घूम उड़ाई ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सुरस सुपक्वसुपावन फल लै, कंचनथार भराई ।

मोच्छ महाफलदायक लखि प्रभु, भेंट धरों गुनगाई ॥ वा० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि० ॥ ८ ॥

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई ।

शिवपदराज हेत हे श्रीपति ! निकट धरों यह लाई ॥ वा० ॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक

छंद पाईता (मात्रा १४)।

कलि छट्ट असाढ़ सुहायौ । गरभागम मंगल पायौ ॥
दशमें दिवितें इत आये । शतइंद्र जजे सिर नाये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं निर्व०

कलि चौदश फागुन जानों । जनमें जगदीश महानों ।
हरि मेर जजे तब जाई । हम पूजत हैं चितलाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

तिथि चौदस फागुन श्यामा । धरियो तप श्रीअभिरामा ॥
नृप सुंदरके पय पायो । हम पूजत अतिसुख थायो ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां तपमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि०

वदि भादव दोइज सोहै । लहि केवल आतम जो है ॥

अनअंत गुनाकर स्वामी । नित बंदों त्रिभुवन नामी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णद्वितीयायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सितभाद्व चौदशि लीनों । निरवान सुथान प्रवीनों ॥
पुर चंपाथानकसेती । हम पूजत निजहित हेती ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

दोहा ।

चंपापुरमें पंचवर, कल्याणक तुम पाय ।
सत्तर धनु तन शोभनो, जै जै जै जिनराय ॥ १ ॥

छंद मोतियदाम (वर्ण १२) ।

महासुखसागर आगर ज्ञान । अनंत सुखामृतभुक्त महान ॥
महाबलमंडित खंडितकाम । रमाशिवसंग सदा विसराम ॥ २ ॥

सुरिंद फनिंद खगिंद नरिंद। मुनिंद जजैं नित पादरविंद ॥
प्रभू तुव अंतरभाव विराग। सुबालहितें व्रतशीलसों राग ॥ ३ ॥
कियो नहिं राज उदाससरूप। सुभावन भावत आतमरूप ॥
अनित्य शरीर प्रपंच समस्त। चिदातम नित्य सुखाश्रित वस्त ॥४॥
अशर्न नही कोउ शर्न सहाय। जहां जिय भोगत कर्म विपाय ॥
निजातम कै परमेसुर शर्न। नहीं इनके विन आपदहर्न ॥ ५ ॥
जगत्त जथा जलबुद्बुद येव। सदा जिय एक लहै फलभेव ॥
अनेकप्रकार धरी यह देह। भमैं भवकानन आन न नेह ॥ ६ ॥
अपावन सात कुधात भरीय। चिदातम शुद्धसुभाव धरीय ॥
धरै इनसों जय नेह तयेव। सु आवत कर्म तवै वसुभेव ॥ ७ ॥
जयै तनभोगजगत्तउदास। धरै तय संवर निर्जरआस ॥
करै जय कर्मकलंक विनाश। लहै तय मोक्ष महासुखराश ॥८॥

तथा यह लोक नराकृत नित्त । विलोकियते षटद्रव्यविचित्त ॥
सु आतमजानन बोधविहीन । धरै किन तत्त्वप्रतीत प्रवीन ॥ ९ ॥
जिनागमज्ञानरु संजमभाव । सबै निजज्ञान विना विरसाव ॥
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल । सुभाव सबै जिहतें शिव हाल ॥१०॥
लयो सब जोग सुपुन्य वशाय । कहो किमि दीजिय ताहि गँवाय
विचारत यों लवकान्तिक आय । नमें पदपंकज पुष्प चढ़ाय ॥११॥
कह्यो प्रभु धन्य कियो सुविचार । प्रबोधि सु येम कियो जु विहार ।
तबै सबधर्मतनों[1] हरि आय । रच्यौ शिविका चढ़ि आप जिनाय ॥
धरे तप पाय सुकेवलबोध । दियो उपदेश सुभव्य सँबोध ॥
लियो फिर मोच्छ महासुखराश । नमैं नित भक्त सोई सुखआश ॥

१ सौधर्मस्वर्गका इन्द्र ।

घत्तानंद।

नित वासववन्दत, पापनिकंदत, वासपूज्य व्रत ब्रह्मपती।
भवसंकलखंडित, आनँदमंडित, जै जै जै जैवंत जती ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥

सोरठा छंद।

वासपूजपद सार, जजौं दरवविधि भावसों।
सो पावै सुखसार, भुक्ति मुक्तिको जो परम ॥ १५ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

इति श्रीवासुपूज्यजिनपूजा समाप्त ॥ १२ ॥

श्रीविमलनाथ जिनपूजा

छंद मत्तगयंद (मात्रा २४)।

सहस्रार दिवि त्यागि, नगर कम्पिला जनम लिय।
कृतधर्मानृपनंद, मातु जयसेन धर्मप्रिय।

तीन लोक वरनन्द, विमल जिन विमल विमलकर।
थापों चरनसरोज, जजनके हेत भावधर ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर। संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ। ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव। वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक।

सोरठा छंद (मनसुखरायजीकृत)।

कंचनझारी धारि, पदमद्रहको नीर ले।
त्रषा रोग निरवारि, विमल विमलगुन पूजिये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति ॥ १ ॥

मलयागर करपूर, देववल्लभा[1] संग घसि।
हरि मिथ्यातमभूर, विमलविमलगुन जजतु हों ॥ २ ॥

---

१ केशर।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति ॥

घाससमनी सुखदास, श्वेत निशापतिको हंसै ।
पूरै वांछित आस, विमलविमलगुन जजत ही ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पारिजात मंदार, सन्तानकसुरतरूजनित ।
जजों सुमन भरि थार, विमल विमलगुन मदनहर ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नव्यगव्य रसपूर, सुवरनथार भरायकैं ।
छुधावेदनी चूर, जजों विमलपद विमलगुन ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मानिक दीप अखंड, गो छाई वर गो दशों ।
हरो मोहतम चंड, विमल विमलमतिके धनी ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अगर तगर घनसार, देवदार कर चूर वर।
खेवों वसु अरि जार, विमल विमलपदपद्मढिग ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

श्रीफल सेव अनार, मधुर रसीले पावने।
जजों विमलपद सार, विघ्न हरैं शिवफल करैं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

आठों दरव संवार, मनसुखदायक पावने।
जजों अरघ भरथार, विमल विमलशिवतिय-रमन ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेद्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक

छंद द्रुतविलम्बित तथा सुंदरि (वर्ण १२)।

गरभ जेठवदी दशमी भनों। परम पावन सो दिन शोभनों ॥

करत मेव सची जननीतणी। हम जजैं पदपद्मशिरोमणी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेंद्राय अर्घं नि०

शुक्लमाघ तुरी तिथि जानिये। जनममंगल तादिन मानिये ॥

हरि तबै गिरिराज विषैं जजे। हम समर्चत आनंद को सजे ॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

तप धरे सितमाघ तुरी भली। निज सुधातम ध्यावत हैं रली ॥

हरि फनेश नरेश जजें तहां। हम जजैं नित आनँदसों इहां ॥३॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लचतुर्दश्यां निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

विमल माघरसी, हनि घातिया। विमलबोध लयो सब भासिया ॥

विमल अर्घ चढ़ाय जजों अबै। विमल आनँद देहु हमैं सबै ॥४॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लषष्ठयां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व०

१ षष्ठी ।

अमरसाकरसी अति पावनों । विमल सिद्ध भये मनभावनों ॥
गिरसमेद हरी तित पूजिया । हम जजैं इतहर्ष धरें हिया ॥५॥

ॐ ह्रीं आषाढकृष्णाष्टम्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीविमलनाथ जिनेन्द्रायार्घं निर्वपामीति

जयमाला

दोहा छंद । अति उपमालंकार ।

गनन चहत उड़गन गगन, छिति थितिके छहँ हँ जेम ।
तिमि गुन बरनन बरनन,–माहिं होय तव केम ॥ १ ॥
साठधनुष तन तुंग है, हेमवरन अभिराम ।
वर बराह पद अंक लखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥ २ ॥

छंद तोटक । (वर्ण १२) ।

जय केवलब्रह्म अनन्तगुनी । तुव ध्यावत शेष महेश मुनी ॥
परमातम पूरन पाप हनी । चितचिंतितदायक इष्ट धनी ॥ ३ ॥

भवआतपध्वंसन इंदुकरं । वर साररसायन शर्मभरं ॥
भव जन्मजरामृतदाघहरं । शरनागतपालन नाथ वरं ॥४॥
नित संत तुमें इन नामनितैं । चितचिंतत हैं गुनगामनितैं ॥
अमलं अचलं अटलं अतुलं । अरलं अछलं अथलं अकुलं ॥ ५॥
अजरं अमरं अहरं अडरं । अपरं अभरं अशरं अनरं ॥
अमलीन अछीन अरीन हने । अमतं अगतं अरतं अघने ॥६॥
अछुधा अतृषा अभयातम हो । अमदा अगदा अवदातम हो ॥
अविरुद्ध अक्रुद्ध अमानधुना । अतलं अशलं अनअंत गुना ॥७॥
अरसं सरसं अकलं सकलं । अवचं सवचं अमनं सबलं ॥
इन आदि अनेकप्रकार सही । तुमको जिन संत जपैं नित ही ॥ ८॥
अब मैं तुमरी शरना पकरी । दुख दूर करो प्रभुजी हमरी ॥
हम कष्ट सहे भवकाननमैं । कुनिगोद तथा थल आननमैं ॥ ९ ॥

तित जामनमर्न सहे जितने । कहि केम सकैं तुमसों तितने ॥
सुमुहूरत अन्तरमाहिं धरे । छह, अै अग छः छहकाय खरे ॥१०॥
छिति वहि वयारिक साधरनं । लघु थूल विभेदनिसों भरनं ॥
परतेक वनस्पति ग्यारभये । छहजार दुधादश भेद लगे ॥११ ॥
सब है अय भु पट छःसु भया । इक इन्द्रियकी परजाय लया ॥
जुग इन्द्रिय काय असी गहियो । तिय इन्द्रिय साठनिमें रहियो॥१२॥
चतुरिंदिय चालिस देह धरा । पनइंदियके चवबीस वरा ॥
सब ये तन धार तहां सहियो । दुखघोर चितारित जात हियो॥१३॥
अब मो अरदास हिये धरिये । दखदंद सबै अब ही हरिये ॥
मनवंछित कारज सिद्ध करो । सुखसार सबै घर रिद्ध भरो ॥१४॥

घत्तानंद छंद ।

जै विमलजिनेशा, नुतनागेशा, नागेशा नरईश सदा ॥

1—११११ ।

भवतापअशेषा, हरननिशेषा, दाता चिन्तित शर्म सदा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा छंद।

श्रीमत विमलजिनेशपद, जो पूजै मनलाय।
पूजैं वांछित आश तसु, मैं पूजों गुनगाय ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः। परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

इति श्रीविमलनाथजिनपूजा समाप्त ॥१३॥

श्रीअनन्तनाथजिनपूजा

कवित्त छंद (मात्रा ३१)।

पुष्पोत्तर तजि नगर अजुध्या, जनम लियो सूर्याउरआय।
सिंघसेन नृपके नंदन, आनंद अशेष भरे जगराय ॥
गुन अनंत भगवंत धरे, भवदंद हरे तुम हे जिनराय।

थापतु हौं त्रयबार उचरिकै, कृपासिन्धु तिष्ठहु इत आय ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक

छंद गीता तथा हरिगीता (मात्रा २८)।

शुचि नीर निरमल गंगको लै, कनकभृंग भराइया ।
मलकरम धोवन हेत मन, वचकाय धार ढराइया ॥
जगपूज परमपुनीत मीत, अनंत संत सुहावनों।
शिवकन्तवन्त महन्त ध्यावों, भ्रंततन्त नशावनों ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति० ॥ १ ॥

हरिचंद कदलीनंद कुंकुम, दंदताप निकंद है ।

सब पापरुजसंतापभंजन, आपको लखि चंद है ॥ ज० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति० ॥ २ ॥

कनशालदुति उजियाल हीर, हिमालगुलकनितैं घनी ।

तसु पुंज तुम पदतर धरत, पद लहत स्वच्छ सुहावनी ॥ ज० ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

पुष्कर अमरतरजनित वर, अथवा अवर कर लाइया ।

तुम चरन पुष्करतर धरत, सरशूल सकल नशाइया ॥ज०॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

पकवान नैना घ्रान रसना,-को प्रमोद सुदाय हैं ।

सो ल्याय चरन चढ़ाय रोग, छुधाय नाश कराय हैं ॥ज०॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

तममोहभानन जानि आनंद, आनि सरन गही अबै ।

वर दीप धारों बारि तुमढिग, सुपरज्ञान जु ध्यो सबै ॥ज०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥६॥

यह गंध चूरि दशांग सुन्दर, धूम्रध्वजमें खेय हों ।

वसुकर्म भर्म जराय तुम ढिग, निजसुधातम वेय हों ॥ज०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय अष्टकमदहनाय धूपंनिव पामीति० ॥ ७ ॥

रसथक्क पक्क सुभक्क चक्क, सुहावनें मृदुपावनें ।

फलसारवृन्द अमन्द ऐसो, ल्याय पूज रचावनें ॥ ज० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनंतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

शुचिनीर चंदन शालिशंदन, सुमन चरु दीवा धरों ।

अरु धूपजुत, अरघ करि करजोरजुग विनति करों ॥ज०॥९॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति० ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक

छंद सुंदरी तथा द्रुतिविलंबित ।

असित कातिक एकम भावनों । गरभको दिन सो गिन पावनों ।
किय सची तित चर्चन चावसों । हम जजैं इत आनँद भावसों ॥१॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णप्रतिपद्दिगर्भमंगलमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जनम जेठवदी तिथि द्वादशी । सकलमंगल लोकविषैं लशी ।
हरि जजे गिरिराज समाजतैं । हम जजैं इत आतमकाजतैं ॥ २॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

भवशरीर विनस्वर भाइयो । असित जेठदुवादशि गाइयो ।
सकल इंद्र जजे तित आइकैं । हम जजैं इत मंगल गाइकैं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णद्वादश्यां निःक्रमणमहोत्सवमण्डिताय श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

असित चैत अमावसको सही । परम केवलज्ञान जग्यो कही ।
लहि समोसृत धर्म धुरंधरो । हम समर्चत विघ्न सबै हरो ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णोमावस्यायां केवलज्ञानप्राप्तये श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

असित चैततुरी तिथि गाइयौ । अघतघाति हने शिवपाइयौ ।
गिरि समेद जजे हरि आयकैं । हम जजैं पद प्रीति लगाइकैं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां मोक्षमंगलप्राप्तये श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

दोहा ।

(विशेपोक्ति अलंकार)

तुम गुनबरनन येम जिम, खंविहाय[1] करमान ॥
तथा मेदिनी पदनि करि, कीनों चहत प्रमान ॥ १ ॥

[1] विभाग

जय अनन्त रवि भव्यमन, जलजवृंद विहसाय ॥
सुमति कोकतियथोक सुख, वृद्ध कियो जिनराय ॥ २ ॥

छंद नयमालनी । तथा चण्डी । तथा तामरस (मात्रा १६)

जै अनन्त गुनवन्त नमस्ते । शुद्धध्येय नितसन्त नमस्ते ॥
लोकालोकविलोक नमस्ते । चिन्मूरत गुनथोक नमस्ते ॥ ३ ॥
रत्नत्रयधर धीर नमस्ते । करमशत्रुकरिकीर नमस्ते ॥
चार अनन्त महन्त नमस्ते । जै जै शिवतिकन्त नमस्ते ॥ ४ ॥
पंचाचारविचार नमस्ते । पंचकर्णमदहार नमस्ते ॥
पंच-परावृत-चूर नमस्ते । पंचमगतिसुखपूर नमस्ते ॥ ५ ॥
पंचलब्धिधरनेश नमस्ते । पंचभावसिद्धेश नमस्ते ॥
छहों दरबगुनजान नमस्ते । छहों काल पहिचान नमस्ते ॥ ६ ॥
छहोंकायरच्छेश नमस्ते । छहसम्यक उपदेश नमस्ते ॥

ससविंशनवनवह्नि नमस्ते । जग केवलअपरह्नि नमस्ते ॥ ७ ॥
ससतत्वगुनभनन नमस्ते । ससशुभगतदनन नमस्ते ॥
ससभंगके ईश नमस्ते । सातों नयकथनीश नमस्ते ॥ ८ ॥
अष्टकरममलदह्न नमस्ते । अष्टजोगनिरशह्न नमस्ते ॥
अष्टम-धराधिराज नमस्ते । अष्ट-गुननि-सिरताज नमस्ते ॥ ९ ॥
जै नवकेवल-प्राप्त नमस्ते । नव पदार्थथिति भास नमस्ते ॥
दशों धरमधरतार नमस्ते । दशों बंधपरिहार नमस्ते ॥ १० ॥
विघ्न-महीधर-विज्जु नमस्ते । जै उरधगति-रिज्जु नमस्ते ॥
तनकनक द्युति पूर नमस्ते । इक्ष्वाकजगनसूर नमस्ते ॥ ११ ॥
धनु पचासतन उच्च नमस्ते । कृपासिंधु गुन शुच्च नमस्ते ॥
सेही-अंक निशंक नमस्ते । चितचकोर मृगअंक नमस्ते ॥ १२ ॥
रागदोषमदटार नमस्ते । निजविचारदुखहार नमस्ते ।

सुर-सुरेश-गन-चंद नमस्ते। 'वृंद' करो सुखकंद नमस्ते ॥१३॥

घत्तानंद छंद।

जय जय जिनदेवं, सुरकृतसेवं, नितकृतचित हुल्लासधर ॥
आपदउद्धारं, समतागारं, वीतरागविज्ञान भरं॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मदावलिप्तकपोल तथा रोड़क छंद (मात्रा २४)।

जो जन मनवचकायलाय, जिन जजै नेह धर।
वा अनुमोदन करैं करावै पढ़ै पाठ वर ॥
ताके नित नव होय, सुमंगल आनँददाई।
अनुक्रमतैं निरवान, लहै सामग्री पाई ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

इति श्रीअनन्तनाथजिनपूजा समाप्त ॥

श्रीधर्मनाथजिनपूजा ।

माधवी तथा किरीट छंद (८ सगण व गुरु)।

तजिके सरवारथ सिद्ध विमान, सुभानके आनि अनँद बढ़ाये।
जगमातसुव्रत्तिके नंदन होय, भवोदधि डूबत जंतु कढ़ाये॥
जिनको गुन नामहिं माहिं प्रकाश है, दासनिको शिवस्वर्ग मँढ़ाये।
तिनके पद पूजनहेत त्रिबार, सुथापतु हौं यह फूल चढ़ाये॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । सवौषट् ।१॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः । २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक

छंद जोगीरासा (मात्रा २८)।

मुनि मनसम शुचि शीर नीर अति, मलय मेलि भरि झारी।

जनमजरामृत तापहरनको , चरचों चरन तुम्हारी ॥
परमधरम-शम-रमन धरम-जिन, अशरन शरन निहारी ।
पूजों पाय गाय गुन सुन्दर, नाचौं दै दै तारी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

केशर चंदन कदली नंदन, दाहनिकंदन लीनों ।
जलसँगघस लसि शसिसमशमकर, भवआताप हरीनों॥पर०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

जलज जीर सुखदास हीर हिम, नीर किरनसम लायो ।
पुंज धरत आनंद भरत भव,–दंद हरत हरषायो ॥ पर० ॥३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥ ३ ॥

सुमन सुमनसम सुमनथालरम, सुमनवृन्द विहसाई ।
सुमन-मथ-मदमथनके कारन, चरचों चरन चढ़ाई ॥ पर० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसना पुष्पं निर्वपामीति ॥ ४ ॥

घेवर बावर अर्द्धचन्द्र सम, छिद्र सहस्र विराजै ।
सुरस मधुर तासों पद पूजत, रोग असाता भाजै ॥ पर० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा ॥

सुंदर नेह सहित वर दीपक, तिमिर हरन धरि आगै ।
नेह सहित गाऊं गुन श्रीधर, ज्यों सुबोध उर जागै ॥पर०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

अगर तगर कृष्णागर तरदिव, हरिचंदन करपूरं ।
चूर खेय जलजवनमांहिं जिमि, करम जरैं वसु कूरं ॥ पर७॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

आम्र काम्रक अनार सारफल, भार मिष्ट सुखदाई ।
सो लै तुमढिग धरहुं कृपानिधि, देहु मोच्छठकुराई ॥पर०॥८।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

आठों दरब साज शुचि चितहर, हरषि हरषि गुनगाई ।
बाजत दृम दृम दृम मृदंग गत, नाचत ता थेई थाई ॥ पर०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीतिस्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक ।

राग टप्पाकी चाल ' खोयोरे गंवार तैं सारो दिन यों ही खोयो' । ऐसी ।

पूजों हो अबार, धरमजिनेसुर पूजों । पूजों हो । टेक ।

आठैं सित वैशाखकी हो । गरभदिवस अधिकार ॥
जगजन वंछित पूजों । हो अबार,
धरमजिनेसुर पूजों । पूजों हो० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लाष्टम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥१॥

शुकल माघ तेरस लयो हो । धरम धरम अवतार ॥
सुरपति सुरगिर पूजों । पूजों हो अबार, ॥धरम०॥२॥

ॐ ह्रीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीधमनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

माघशुकल तेरस लयो हो । दुद्धर तप अविकार ॥

सुररिषि सुमनन पूज्यो । पूजों हो अवार, ॥ धरम० ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमाघशुक्लत्रयोदश्यां निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

पोषशुकल पूनम हने अरि । केवल लहि भवितार ॥

गनसुर नरपति पूज्यो । पूजों हो अवार, ॥ धरम० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपौषशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानमण्डिताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जेठशुकल तिथि चौथकी हो । शिव समेदतैं पाय ॥

जगतपूजपद पूजों । पूजों हो अवार ॥ धरम० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला ।

दोहा (विशेषोक्ति अलंकार)।

घनाकार करि लोक पट, सकल उदधि मसि तंत ।
लिखै शारदा कलम गहि, तदपि न तुव गुन अंत ॥ १ ॥

छंद पद्धरी (मात्रा १६)।

जय धरमनाथ जिन गुनमहान । तुम पदको मैं नित धरों ध्यान ॥
जय गरभजनम तप ज्ञानजुक्त । वर मोच्छ सुमंगल शर्म-भुक्त॥ २ ॥
जय चिदानंद आनंदकंद । गुनवृन्द सु ध्यावत मुनि अमंद ॥
तुम जीवनिके विनु हेत मित्त । तुम ही हो जगमें जिन पवित्त॥३ ॥
तुम समवसरणमें तत्त्वसार । उपदेश दियो है अति उदार ॥
ताकों जे भवि निज हेत चित्त । धारैं ते पावैं मोच्छवित्त ॥ ४ ॥
मैं तुम मुख देखत आज पर्म । पायो निजआतमरूप धर्म ॥

मोकों अब भौभयतैं निकार। निरभयपद दीजे परमसार ॥ ५ ॥
तुम सम मेरो जगमें न कोय। तुमहीतैं सब विधि काज होय ॥
तुम दयाधुरन्धर धीर वीर। मेटी जगजनकी सकल पीर ॥ ६ ॥
तुम नीतनिपुन विनरागदोष। शिवमग दरसावतु हो अदोष ॥
तुम्हरे ही नामतने प्रभाय। जगजीव लहैं शिव-दिव-सुराव ॥ ७ ॥
तातैं मैं तुमरी शरण आय। यह अरज करतु हों शीस नाय ॥
भवबाधा मेरी मेट मेट। शिवराधासों करि भेट भेट ॥ ८ ॥
जंजाल जगतको चूर चूर। आनंद अनूपम पूर पूर ॥
मति देर करो सुनि अरज एव। हे दीनदयाल जिनेश देव ॥ ९ ॥
मोंको शरना नहिं और ठौर। यह निहचै जानों सुगुन-मौर ॥
वृंदावन, वंदत प्रीति लाय। सब विघन मेट हे धरम-राय ॥ १० ॥

छंद घत्तानंद (मात्रा ३१)।

जय श्रीजिनधर्मं, शिवहितपर्मं श्रीजिनधर्मं उपदेशा।
तुम दयाधुरंधर विनतपुरंदर, कर उरमंदर परवेशा ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ निर्वपामीति स्वाहा ॥ ११ ॥

छंद मदावलिप्तकपोल (मात्रा २४)।

जो श्रीपतिपद जुगल, उगल मिथ्यात जजै भव।
ताके दुख सब मिटहिं, लहै आनँदसमाज सब ॥
सुर-नर-पति-पद भोग, अनुक्रमतैं शिव जावै।
वृंदावन यह जानि धरम, जिनके गुन ध्यावै ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।

इति श्रीधर्मनाथजिनपूजा समाप्त ॥१५॥

श्रीशान्तिनाथ जिनपूजा ।

मत्तगयंद छंद । (शब्दाडम्बर तथा जमकालंकार) ।

या भवकाननमें चतुरानन, पापपनानन घेरि हमेरी ।
आतमजान न मान न ठान न, बान न होइ सठ मेरी ॥
तामद भानन आपहि हो, यह छान न आन न आननटेरी ।
आनगही शरनागतको, अब श्रीपतजी पत राखहु मेरी ॥ १॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र । अत्र अवतर अवतर । सवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठतिष्ठ । ठः ठ. ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक

छंद त्रिभंगी । अनुप्रयासक । (मात्रा ३२ जगनवर्जित) ।

हिमगिरिगतगंगा,-धार अभंगा, प्रासुक सङ्गा, भरि भृङ्गा ।

जरमरनमृतंगा, नाशि अघंगा, पूजिपदंगा मृदुहिंग ॥
श्रीशान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं ।
हनि अरिचक्रेशं, हेगुनधेशं, दयामृतेशं, मक्रेशं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति० ॥ १ ॥

वर बावनचंदन, कदलीनंदन, घनआनंदन सहित घसों ।
भवतापनिकदंन, ऐरानदंन, वंदि अमंदन, चरनवसों॥श्री०॥२॥

ॐ ह्री श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति० ॥ २ ॥

हिमकरकरी लज्जत, मलयसुसज्जत, अच्छत जज्जत, भरिथारी ।
दुखदारिदगज्जत, सदपदसज्जत, भवभयभज्जत, अतिभारी ॥श्री०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निवपामीति० ॥ ३ ॥

मंदार सरोजं, कदली जोजं, पुंज भरोजं, मलयभरं ।
भरि कंचनथारी, तुमढिग धारी, मदनविदारी, धीरधरं ॥श्री०४॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

पकवान नवीने, पावन कीने, षटरसभीने, सुखदाई ॥
मनमोदनहारे, छुधा विदारे, आगैं धारे, गुनगाई ॥ श्री० ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नवेद्यं निर्वपामीति ॥ ५ ॥

तुम ज्ञानप्रकाशे, भ्रमतमनाशे, ज्ञेयविकाशे सुखरासे ॥
दीपक उजियारा, यातैं धारा, मोह निवारा, निजभासे ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

चन्दन करपूरं, करिवर चूरं, पावक भूरं, माहिजुरं ।
तसु धूम उड़ावै, नाचत आवै, अलि गुंजावै, मधुरसुरं ॥श्री०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

बादाम खजूरं, दाड़िम पूरं, निंबुक भूरं, लै आयो ।
तासों पद जज्जों, शिवफल सज्जों, निजरसरज्जों, उमगायो ॥श्री॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८॥

वसु द्रव्य सँवारी, तुमढिग धारी, आनँदकारी, दृगप्यारी ।
तुम हो भवतारी, करुनाधारी, यातैं थारी, शरनारी ॥ श्री० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९॥

पंचकल्याणक ।

सुंदरी तथा द्रुतविलंबित छंद ।

असित सातय भादवँ जानिये । गरभमंगल तादिन मानिये ॥
सचि कियो जननी पद चर्चनं । हम करैं इत ये पद अर्चनं ॥१॥

ॐ ह्रीं भाद्रपदकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्व० ॥

जनम जेठ चतुर्दशि श्याम है । सकलइंद्र सु आगत धाम है ॥
गजपुरै गज साजि सबै तबै । गिरि जजे इतमैं जजि हों अबै ॥२॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०॥२॥

भव शरीर सुभोग असार हैं। इमि विचार तबै तप धार हैं॥
भ्रमर चौदश जेठ सुहावनी। धरमहेत जजों गुन पावनी॥ ३॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

शुकलपोष दशैं सुखराश है। परम-केवल-ज्ञान प्रकाश है॥
भवसमुद्रउधारन देवकी। हम करैं नित मंगल सेवकी॥ ४॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥४॥

असित चौदश जेठ हनें अरी। गिरि समेदथकी शिव-ती वरी॥
सकलइंद्र जजैं तित आइकैं। हम जजैं इत मस्तक नाइकैं॥ ५॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीशांतिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥५॥

जयमाला ।

छंद रथोद्धता, चंद्रवत्स तथा चंद्रवर्त्म (वर्ण ११—लाटानुप्रास) ।

शान्ति शान्तिगुनमंडिते सदा । जाहि ध्यावत सुपंडिते सदा ॥
मैं तिन्हें भगतमंडिते सदा । पूजि हों कलुषहंडिते सदा ॥ १ ॥
मोच्छहेत तुम ही दयाल हो । हे जिनेश गुनरत्नमाल हो ।
मैं अबै सुगुनदाम ही धरों । ध्यावतें तुरित मुक्ति-ती वरों ॥ २ ॥

छंद पद्धरि (१६ मात्रा) ।

जय शान्तिनाथ चिद्रूपराज । भवसागरमें अद्भुत जहाज ॥
तुम तजि सरवारथसिद्ध थान । सरवारथजुत गजपुर महान ॥ १ ॥
तित जनम लियौ आनन्द धार । हरि ततछिन आयो राजद्वार ॥
इन्द्रानी जाय प्रसूतथान । तुमको करमें लै हरष मान ॥ २ ॥
हरि गोद देय सो मोदधार । सिर चमर अमर ढारत अपार ॥

गिरिराज जाय तित शिला पांड। तापै थाप्यौ अभिषेक माड ॥ ३॥
तित पंचम उदधि तनों सु वार। सुर कर कर करि ल्याये उदार ॥
तब इंद्र सहसकर करि अनंद। तुम सिर धारा ढार्‌यौ सुनंद ॥ ४॥
अघ घघ घघ घघ धुनि होत घोर। भभ भभ भभ धध धध कलशशोर ॥
दमदम दमदम बाजत मृदंग। झन नन नन नन नन नूपुरंग ॥ ५ ॥
तन नन नन नन नन तनन तान। घन नन नन घंटा करत ध्वान ॥
ताथेई थेई थेई थेई थेई सुचाल। जुन नाचत नावत तुमहिं भाल ॥ ६॥
चट चट चट अटपट नटत नाट। झट झट झट हट नट शट विराट ॥
इमि नाचत राचत भगत रंग। सुर लेत जहां आनंद संग ॥ ७ ॥
इत्यादि अतुल मंगल सुठाट। तित बन्यौ जहां सुरगिरि विराट ॥
पुनि करि नियोग पितु सदन आय। हरि सौंप्यौ तुम तित वृद्ध थाय ॥
पुनि राजमाहिं लहि चक्ररत्न। भोग्यौ छखंड करि धरम जत्न ॥

पुनि तप धरि केवलरिद्धिपाय। भवि जीवनकों शिवमग बताय ॥
शिवपुर पहुंचे तुम हे जिनेश। गुनमंडित अतुल अनन्त भेष ॥
मैं ध्यावतु हों नित शीश नाय। हमरी भवबाधा हरि जिनाय॥ १०॥
सेवक अपनों निज जान जान। करुना करि भौभय भान भान ॥
यह विघन मूल तरु खंड खंड। चितचिन्तित आनँदमंड मंड॥ ११॥

घत्तानद छंद (मात्रा ३१)।

श्रीशान्ति महंता, शिवतियकंत, सुगुन अनंता, भगवन्ता॥
भवभ्रमन हनंता, सौख्यअनंता, दातारं तारनवन्ता॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १ ॥

छंद रूपक सवया (मात्रा ३१)।

शांतिनाथजिनके पदपंकज, जो भवि पूजै मनवचकाय।
जनम जनमके पातक ताके, ततछिन तजिकैं जाय पलाय॥

मनवांछित सुख पावै सो नर, बाँचै भगतिभाव अति लाय ।
तातैं 'वृन्दावन' नित वंदै, जातैं शिवपुरराज कराय ॥ १ ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

इति श्रीशान्तिनाथजिनपूजा समाप्ता ॥ १६ ॥

श्रीकुंथुनाथजिनपूजा ।

छंद माधवी तथा किरीट (वर्ण २४) ।

अजअंक अजैपद राजै निशंक, हरै भवशंक निशंकित दाता ॥
मदमत्त मतंगके माथे गंथे, मतवाले तिन्हें हनें ज्यों हरिहाता ।
गजनागपुरै लियो जन्म जिन्हों, रविके प्रभनंदन श्रीमतिमाता ।
सहकुंथुसुकुंथुनिके प्रतिपालक, थापों तिन्हें जुतभक्ति विख्याता ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक

चाल लावनी मरहठी की लाला मनसुखरायजी कृत।

कुंथु सुन अरज दासकेरी। नाथ सुनि अरज दासकेरी ॥
भवसिन्धु पर्‌यो हों नाथ निकारो बांह पकर मेरी ॥
प्रभू सुन अरज दासकेरी। नाथ सुनि अरज दासकेरी
जगजाल पर्‌यो हों बेग निकारो बांह पकर मेरी ॥ टेक ॥
सुरतरनीको उज्जल जल भरि, कनकभृंग भेरी।
मिथ्यातृषा निवारन कारन, धरों धार नेरी ॥ कुंथु॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

बावन चंदन कदलीनंदन, घँसिकर गुन टेरी।
तपत मोह नाशनके कारन, धरों चरन नेरी ॥ कुंथ ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

मुक्ताफलसम उज्जल अच्छत, सहित मलय लेरी।
पुंज धरों तुम चरनन आगैं, अखय सुपद देरी ॥ कुंथु ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३॥

कमल केतकी वेला दौना, सुमन सुमनसेरी।
समर शूलनिरमूल हेतु प्रभु, भेंट करों तेरी ॥ कुंथु० ॥ ४॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

घेवर बावर मोदन मोदक, मृदु उत्तम पेरी।
तासों चरन जजों करुनानिधि, हरो छुधा मेरी ॥ कुं०॥ ५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय क्षुद्रोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति [illegible] ॥ ५ ॥

कंचन दीपमई वर दीपक, ललित जोति घेरी।
सो लै चरन जजों भ्रमतम रवि, निज सुबोध देरी ॥ कुं०॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६॥

देवदारु हरि अगर तगर करि चूर अगनि खेरी ।
अष्ट करम ततकाल जरै ज्यों, धूम धनंजेरी ॥ कुंथु० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

लोंग लायची पिस्ता केला, कमरख शुचि लेरी ।
मोच्छ महाफल चाखन कारन, जजों सुकरि ढेरी ॥ कुंथु० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल चंदन तंदुल प्रसून चरु, दीप धूप लेरी ।
फलजुत जजन करों मन सुख धरि, हरो जगत फेरी ॥ कुं० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक ।

मोतीदाम छंद (वर्ण १२) ।

सुसावनकी दशमी कलि जान । तज्यो सरवारथसिद्ध विमान ॥

भयो गरभागममंगल सार । जजैं हम श्रीपद अष्टप्रकार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

महा वयशाख सु एकम शुद्ध । भयो तब जन्मतिज्ञान समुद्ध ॥
कियो हरि मंगल मंदिरशीस । जजैं हम अत्र तुम्हें नुतशीस ॥ २॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदि जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

तज्यो खटखंड विभौ जिनचंद । विमोहितचित्तचितारि सुछंद ॥
धरे तप एकम शुद्ध विशाख । सुमग्न भये निजआनंद चाख ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिप्रदि निःक्रममहोत्सवमण्डिताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सुदी तिय चैत सु चेतन शक्त । चहूं अरि छै करि तादिन व्यक्त ॥
भई समवस्रत भाखि सुधर्म । जजों पद ज्यों पद पाइय पर्म ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ४ ॥

सुदी वयशाख सु एकम नाम । लियौ तिहिं द्यौस अभै शिवधाम ॥

जजे हरि हर्षित मंगल गाय। समर्चतु हौं सु हिया वचकाय ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदि मोक्षमंगलप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला।

अरिल्ल छंद। (मात्रा २१ रूपकालंकार)

खट खंडनके शत्रु राजपदमें हने।
धरि दीक्षा खटखंडन पाप तिन्हें दनें ॥
त्यागि सुदरशन चक्र धरमचक्री भये।
करमचक्र चकचूर सिद्ध दिढ़ गढ़ लये ॥ १ ॥

ऐसे कुंथजिनेशतनें पदपद्मकों।
गुन अनन्त भंडार महासुखसद्मकों ॥
पूजों अरघ चढ़ायपूरणानंद हो।
चिदानंद अभिनंद इंदगनवंद हो ॥ २॥

पद्धरि छंद (मात्रा १६)।

जय जय जय जय श्रीकुंथुदेव। तुम ही ब्रह्मा हरि त्रिंबुकेव ॥
जय बुद्धि विदांबर विष्णु ईस। जय रमाकंत शिवलोक शीस ॥३॥
जय दयाधुरंधर सृष्टिपाल। जय जय जगबंधू सुगुनमाल ॥
सरवारथसिद्धविमान छार। उपजे गजपुरमें गुन अपार ॥ ४ ॥
सुरराज कियो गिरन्हौन जाय। आनन्द-सहित जुत-भगत भाय ॥
पुनि पिता सौंपि कर मुदित अंग। हरि तांडव-निरत कियो अभंग॥
पुनि स्वर्ग गयो तुम इत दयाल। वय पाय मनोहर प्रजापाल॥
खटखंडविभौ भोग्यौ समस्त। फिर त्याग जोग धार्यो निरस्त॥६॥
तब घाति घात केवल उपाय। उपदेश दियो सबहित जिनाय॥
जाके जानत भ्रम-तम विलाय। सम्यकदरशन निरमल लहाय॥ ७॥
तुम धन्य देव किरपा-निधान। अज्ञान-छपा-तमहरन भान ॥

जय स्वच्छगुनाकर शुक्तशुक्त । जय स्वच्छ सुखामृत भुक्तभुक्त ॥८॥
जय भौभयभंजन कृत्यकृत्य । मैं तुमरो हों निज भृत्य भृत्य ॥
प्रभु अशरन शरन अधार धार । मम विघ्नतूलगिरी ज़ार जार ॥९॥
जय कुनय-यामिनी सूर सूर । जय मनवंछित सुख पूर पूर ॥
मम करमबंध दिढ़ चूर चूर । निजसम आनँद दै भूर भूर ॥१०॥
अथवा जब लौं शिव लहौं नाहिं । तब लों ये तो नित ही लहाहिं ।
भव भव श्रावक-कुलजनमसार। भव भव सतमत सतसंग धार।११।
भवभव निज आतम-तत्त्व-ज्ञान। भवभव तप संजम शील दान ॥
भवभव अनुभव नित चिदानंद । भवभव तुम आगम हे जिनंद॥१२॥
भवभव समाधिजुत मरन सार। भवभव व्रत चाहों अनागार ॥
यह मोकों हे करुणानिधान । सब जोग मिलो आगम प्रमान ॥१३॥
जब लों शिव सम्पति लहों नाहिं। तबलों मैं इनकों नित लहाँहिं ॥

यह अरज हिये अवधारि नाथ । भवसंकट हरि कीजे सनाथ ॥१४॥

छंद घत्तानन्द (मात्रा ३१)।

जय दीनदयाला, वरगुनमाला, विरदविशाला सुख आला ॥
मैं पूजों ध्यावों, शीस नमावों, देहु अचल पदकी चाला ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १५ ॥

छंद रोड़क मात्रा (२४)।

कुंथुजिनेसुरपादपदम, जो प्रानी ध्यावैं।
अलि समकर अनुराग, सहज सो निजनिधि पावैं ॥
जो बाँचैं सरदहैं, करैं अनुमोदन पूजा,
वृंदावन तिह पुरुष सदृश, सुखिया नहिं दूजा ॥१६॥

इत्याशीर्वादः पुरिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

इति श्रीकुंथुनाथजिनपूजा समाप्त ॥ १७ ॥

श्रीअरनाथजिनपूजा

छप्पय छंद (वीररसरूपकालंकार मात्रा १५२)।

तप तुरंग असवार धार, तारन विवेक कर ।
ध्यान शुकल असिधार, शुद्ध सुविचार सुबखतर ॥
भावन सेना धरम, दशों सेनापति थापे ।
रतन तीन धर सकति, मंत्रि अनुभो निरमापे ॥
सत्तातल सोहं सुभट धुनि, त्याग केतु शत अग्र धरि ।
इहविध समाज सज राजकों, अरजिन जीते करम अरि ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्र । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक

छंद त्रिभंगी (अनुप्रयासक मात्रा ३२—जगनवर्जित) ।

कनमनिमय झारी, दृगसुखकारी, सुरसरितारी नीरभरी ॥
मुनिमनसम उज्ज्वल, जनमजरादल, सो लै पदतल, धार करी ॥
प्रभु दीनदयालं, अरिकुलकालं, विरदविशालं सुकुमालम् ॥
हनि मम जंजालं, हे जगपालं, अरगुनमालं, वरभालम् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

भवताप नशावन, विरद सुपावन, सुनि मनभावन मोद भयो ।
तातैं घसि बावन, चंदन पावन, तरहिं चढ़ावन, उमगि अयो ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

तंदुल अनियारे, श्वेत सँवारे, शशिदुति टारे, थार भरे ।
पद अखय सुदाता, जगविख्याता, लखि भवताता, पुंज धरे ॥ प्रभु० ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान निर्वपामीति स्वाहा॥ ३ ॥

सुरतरुके शोभित, सुरन मनोभित, सुमन अछोभित, लै आयो ।
मनमथके छेदन, आप अवेदन, लखि निरवेदन, गुन गायौ ॥प्रभु० ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

नेवज सज भक्षक, प्रासुक अक्षक, पक्षकरक्षक, स्वच्छ धरी ।
तुम करमनिकक्षक भस्मकलक्षक दक्षक पक्षक, रक्षकरी ॥ प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

तुम भ्रमतमभंजन, मुनिमनकंजन,-रंजन गंजनमोहनिशा ।
रविकेवलस्वामी, दीप जगामी, तुम ढिग आमी, पुन्यदशा ॥प्रभु० ॥

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

दशधूप सुरंगी गंधअभंगी वन्हिवरंगीमांहिं हवै ।
वसुकर्म जरावै धूमउड़ावै, ताँडव भावैं नृत्य पवै ॥ प्रभु ०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अष्टकमदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

रितुफल अति पावन, नयनसुहावन, रसनाभावन, कर लीनें ।
तुम विघनविदारक, शिवफलकारक, भवदधि-तारक, चरचीनें ॥प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

सुचि स्वच्छ पटीरं, गंधगहीरं, तंदुल शीरं, पुष्पचरुं ।
वर दीपं धूपं, आनँदरूपं, लै फल भूपं, अर्घकरं ॥प्रभु०

ॐ ह्रीं श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९ ॥

पंचकल्याणक

छंद चौपाई (मात्रा १६) ।

फागुन सुदी तीज सुखदाई गरभ सुमंगल ता दिन पाई ।
मित्रादेवी उदर सु आये । जजे इंद्र हम पूजन आये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लतृतीयायां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ १ ॥

मँगसिर शुद्ध चतुर्दशि सोहै । गजपुर जनम भयो जग मोहै ॥
सुरगरु जजे मेरुपर जाई । हम इत पूजैं मनवचकाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०।२।

मंगसिर सित चौदस दिन राजै । तादिन संजम धरे विराजै ।
अपराजित घर भोजन पाई । हम पूजैं इत चित हरषाई ॥ ३॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लचतुर्दश्यां निःक्रममङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

कातिक सित द्वादसि अरि चूरे । केवलज्ञान भयो गुन पूरे ॥
समवसरनथिति धरम बखाने । जजत चरन हम पातक भाने ॥४॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वादश्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

चैत शुकल ग्यारस सब कर्मं । नाशि वास किय शिव-थल पर्मं ।
निहचल गुन अनंत भंडारी । जजों देव सुधि लेहु हमारी ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लैकादश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीअरनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥ ५ ॥

जयमाला ।

दोहा छंद (जमकपद तथा लाटानुबंधन।)

बाहर भीतरके जिते, जाहर अर दुखदाय।
ता हर कर अरजिन भये, साहर शिवपुर राय ॥ १ ॥
राय सुदरशन जासु पितु, मित्रादेवी माय।
हेमबरन तन वरष वर, नव्वे सहस सुआय ॥ २ ॥

छंद तोटक (वर्ण १२)।

जय श्रीधर श्रीकर श्रीपति जी। जय श्रीवर श्रीभर श्री मति जी ॥
भवभीमभवोदधि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ३ ॥
गरभादिक मंगल सार धरे। जग जीवनिके दुखदंद हरे ॥
कुरुवंशशिखामनि तारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥४॥
करि राज छखंडविभूतिमई। तप धारत केवलबोध ठई ॥

गण तीस जहां भ्रमवारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥५॥
भविजीवनिकों उपदेश दियौ। शिवहेत सबै जन धारि लियौ ॥
जगके सब संकट टारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥६॥
कहि बीसप्ररूपनसार तहां। निजशर्मसुधारस धार जहां ॥
गति चार हृषी पन धारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥७॥
खट काय तिजोग तिवेद मथा। पनवीस कषा वसु ज्ञान तथा ॥
सुर संजमभेद पसारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥ ८ ॥
रस दर्शन लेश्यय भव्य जुगं। खट सम्यक सैनिय भेद युगं ॥
जुग हार तथा सु अहारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥९॥
गुनथान चतुर्दश मारगना। उपयोग दुवादश भेद भना ॥
इमि बीस विभेद उचारन हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१०॥
इन आदि समस्त बखान कियौ। भवि जीवननें उरधार लियौ ॥

घितने शिवघादिन धारन हैं। अरनाथ नमो सुखकारन हैं ॥११॥
फिर आप अघाति विनाश सबै। शिवधामविर्षे थित कीन तबै ॥
कृतकृत्य प्रभू जगतारन हैं। अरनाथ नमों सुख कारन हैं ॥१२॥
अब दीनदयाल दया धरिये। मम कर्म कलंक सबै हरिये ॥
तुमरे गुनको कछु पार न हैं। अरनाथ नमों सुखकारन हैं ॥१३॥

घत्तानंद छंद (मात्रा ३१)।

जय श्रीअरदेवं, सुरकृतसेवं, समताभेवं, दातारं।
अरिकर्मविदारन, शिवसुखकारन, जय जिनवर जगत्रातारं ॥१४॥

इति श्रीअरनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

छंद आर्या (मात्रा ६०)।

अरजिनकेपदसारं, जो पूजै द्रव्यभावसों प्रानी।

सो पावै भवपार, अजरामर मोच्छथान सुखखानी ॥ १५ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।

इति श्रीअरनाथजिनपूजा समाप्त ॥१८॥

श्रीमल्लिनाथजिनपूजा

छंद रोड़क ।

अपराजिततैं आय नाथ मिथिलापुर जाये ।
कुंभरायके नन्द, प्रजापति मात बताये ॥
कनक वरन तन तुंग, धनुष पच्चीस विराजैं ।
सो प्रभु तिष्ठहु आय निकट मम ज्यों भ्रमभाजैं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥३॥

अष्टक

छंद जोगीरासा (मात्रा २८)।

सुर-सरिता-जल उज्जल लै कर, मनिभृंगार भराई ।
जनम जरामृत नाशनकारन, जजहुं चरन जिनराई ॥
राग-दौष-मद-मोहहरनको, तुम ही हौ वरवीरा ।
यातें शरन गही जगपतिजी, बेग हरौ भवपीरा ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

बावनचंदन कदलीनन्दन, कुंकुमसंग घसायौ ।
लेकर पूजौं चरनकमल प्रभु, भवआताप नशायौ ॥राग०॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति० ॥२॥

तंदुलशशिसम उज्जललीनें, दीनें पुंज सुहाई ।
नाचत राचत भगति करत ही, तुरित अखैपद पाई ॥राग०॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

पारिजातमंदार सुमन, संतानजनित महकाई ।
मार सुभट मदभंजनकारन, जजहुं तुम्हें शिरनाई ॥राग०॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

फेनी गोंझा मोदनमोदक, आदिक सद्य उपाई ।
सो लै क्षुधा निवारन कारन, जजहुंचरन लवलाई ॥ राग० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

तिमिरमोह उरमंदिर मेरे, छाय रह्यो दुखदाई ।
तासु नाशकारनको दीपक, अद्भुतजोति जगाई ॥राग०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

अगर तगर कृष्णागर चंदन, चूरि सुगंध बनाई ।
अष्टकरम जारनको तुमढिग, खेवतु हौं जिनराई ॥राग०॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति० ॥ ७ ॥

श्रीफल लौंग बदाम छुहारा, एला केला लाई।
मोखमहाफलदाय जानिकै, पूजौं मन हरखाई ॥राग०॥८॥।
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जल फल अरघ मिलाय गाय गुन, पूजों भगति बढ़ाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीधर, सरन गही मैं आई ॥राग०॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक

लक्ष्मीधरा छन्द (१२ वर्ण)।

चैतकी शुद्ध एकैं भली राजई। गर्भकल्यान कल्यानकों साजई ॥
कुंभराजा प्रजापति माता तने। देवदेवी जजे शीस नाये घने ॥
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लप्रतिपदा गर्भागममङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

मार्गशीर्षे सुदी ग्यारसी राजई। जन्मकल्यानको द्यौस सो छाजई ॥

इंद्र नागेंद्र पूजें गिरेंद्रे जिन्हें । मैं जजों ध्यायकें शीस नावों तिन्हें॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

मार्गशीर्षसुदीग्यारसीके दिना । राजको त्याज दीच्छा धरी है जिना।
दान गोछीरको नंदसेनैं दयो । मैं जजों जासुके पंचचर्जे भयो ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पौषकी श्यामदूती हने घातिया । केवलज्ञानसाम्राज्य लक्ष्मीलिया ।
धर्मचक्री भये सेव शक्री करैं । मैं जजों चर्न ज्यों कर्मवक्री टरैं ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

फाल्गुनी सेत पांचैं अघाती हते । सिद्ध आलै वसे जाय सम्मेदतें ॥
इंद्रनागेंद्र कीन्हीं क्रिया आयकें । मैं जजों सो मही ध्यायकें गायकें ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लपञ्चम्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

जयमाला

घत्तानन्द छंद (मात्रा ३१)।

तुअ नमित सुरेशा, नरनागेशा, रजतनगेशा, भगतिभरा ॥
भवभयहरनेशा, सुखभरनेशा, जै जै जै शिवरमनिवरा ॥१॥

पद्धरि छंद (मत्रा १६ लघ्वंत)।

जय शुद्ध चिदातम देव एव। निरदोष सुगुन यह सहज टेव ॥
जय भ्रमतमभंजन मारतंड। भविभवदधितारनकों तरंड ॥ २ ॥
जय गरभजनममंडित जिनेश। जय छायक समकित बुद्ध भेस ॥
चौथै किय सातों प्रकृति छीन। चौ अनंतानु मिथ्यात तीन ॥ ३ ॥
सातँय किय तीनों आयु नाश। फिर नवें अंश नवमें विलाश ॥
तिनमाहिं प्रकृत छत्तीस चूर। याभांति कियौ तुम ज्ञानपूर ॥ ४ ॥
पहिले महँ सोलह कहँ प्रजाल। निद्रानिद्रा प्रचलाप्रचाल ॥

हनि थानगृद्धिकों सकल कुब्ब। नर तिर्यंग्गति गत्यानुपुव्व ॥ ५ ॥
इक बे ते चौ इंद्रीय जात। थावर आतप उद्योत घात ॥
सूच्छम साधारन एम चूर। पुनि दुतिय अंश वसु करयो दूर ॥६॥
चौ प्रत्याप्रत्याख्यान चार। तीजे सु नपुंसकवेद टार ॥
चौथे तियवेद विनाश कीन। पांचैं हास्यादिक छहों छीन ॥ ७ ॥
नरवेद छठें छय नियत धीर। सातयें संज्वलन क्रोध चीर ॥
आठवें संज्वलन मानभान। नवमें माया संज्वलनहान ॥ ८ ॥
इमि घात नवें दशमें पधार। संज्वलनलोभ तित हू विदार ॥
पुनि द्वादशके द्वयअंशमाहिं। सोरह चकचूर कियो जिनाहिं ॥९॥
निद्रा प्रचला इकभागमाहिं। दुति अंश चतुर्दश नाश जाहिं ॥
ज्ञानावरनी पन दरश चार। अरि अंतराय पांचों प्रहार ॥ १० ॥
इमि छय त्रेशठ केवल उपाय। धरमोपदेश दीन्हों जिनाय ॥

नवकेवललब्धि विराजमान। जय तेरमगुनथिति गुन अमान ॥ ११॥
गत चौदहमें है भाग तत्र। छय कीन बहत्तर तेरहत्र ॥
वेदनी असाताको विनाश। औदारि विक्रियाहार नाश ॥ १२ ॥
तैजस्यकारमानों मिलाय। तन पञ्चपञ्च बन्धन विलाय॥
संघात पंच घाते महंत। त्रय आंगोपांग सहित भनंत ॥ १३ ॥
संठान संहनन छह छहेव। रसवरन पंच वसु फरस भेव ॥
जुगगंध देवगति सहित पुव्व। पुनि अगुरु लघू उस्वास दुव्व ॥१४॥
परउपघातक सुविहाय नाम। जुत अशुभगमन प्रत्येक खाम ॥
अपरज थिर अथिर अशुभसुमेव। दरभाग सुसुर दुस्सुर अमेव १५
अन आदर और अजस्य कित्त। निरमान नीच गोतौ विचित्त॥
ये प्रथम बहत्तर दिय खपाय। तब दूजेमें तेरह नशाय ॥ १६ ॥
पहले सातावेदनी जाय। नरआयु मनुषगतिको नशाय ॥

मानुषगत्यानु सु पूरवीय । पंचेंद्रिय जात प्रकृती विधीय ॥ १७ ॥
त्रसवादर परजापति सुभाग । आदरजुत उत्तम गोतपाग ॥
जस कीरत तीरथ प्रकृत जुक्त । ए तेरह छय करि भये मुक्त॥१८॥
जय गुन अनन्त अविकार धार । वरनत गनधर नहिं लहत पार ।
ताकों मैं वन्दौं बारबार । मेरो आपद उद्धार धार ॥ १९ ॥
सम्मेदशैल सुरपति नमन्त । तव मुकतथान अनुपम लसन्त ।
वृन्दावन वन्दत प्रीतलाय । मम उरमें तिष्ठहु हे जिनाय ॥ २० ॥

घत्तानंद ।

जय जय जिन स्वामी, त्रिभुवन नामी, मल्ल विमलकल्यान करा ॥
भवदन्दविदारन आनन्दकारन, भविकुमोदनिशिईश वरा ॥२१ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शिखरिणी ।

जजे हैं जो प्रानी दरब अरु भावादि विधिसों ।

करै नानाभांती भगति थुति औ नौति सुधिसों ॥
लहै शक्री चक्री सकल सुख सौभाग्य तिनको ।
तथा मोक्षं जावै जजत जन जो मल्लिजिनको ॥ २२ ॥

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

इति श्रीमल्लिनाथजिनपूजा समाप्त ॥१९॥

श्रीमुनिव्रतजिनपूजा ।

मत्तगयन्द ।

प्रानत स्वर्ग विहाय लियो जिन, जन्म सुराजगृहीमहँ आई ।
श्रीसुहमित्त पिता जिनके, गुनवान महापदमा जसु माई ॥
बीस धनू तनु श्याम छवी, कछ अंक हरी वरवंश बताई ।
सो मुनिसुव्रतनाथ प्रभू कहँ, थापतु हौं इत प्रीति लगाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिन । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक

गीतिका ।

अब श्रीमुनिसुव्रत मैं पांयनि परों । सुखदाय लखि पायनि परों ॥ टेक ॥

उज्जल सुजल जिमि जस तिहारौ, कनक झारीमें भरों ।
जरमरन जामन हरन कारन, धार तुमपदतर करों ॥
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनिगुन माल हैं।
तसु चरन आनँदभरन तारन, तरन विरद विशाल हैं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भवतापघायक शांतिदायक, मलय हरि घसि ढिग धरों ।
गुनगाय शीस नमाय पूजत, विघनताप सबै हरों ।। शि० ।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।।

तन्दुल अखंडित दमक शशिसम, गमक जुत थारी भरों ।
पद अखयदायक मुकतिनायक, जानिपद पूजा करों ।। शिव।। ३ ।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।।

बेला चमेली रायबेली, केतकी करना सरों ।
जगजीत मनमथहरन लखि प्रभु, तुम निकट ढेरी करों ।।शि०।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिव्रतजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।।

पकवान विविध मनोज्ञ पावन, सरस मृदगुन विस्तरों ।
सो लेय तुम पदतर धरत ही, छुधा डाइनको हरों ।शि०।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय क्षुद्रोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

दीपक अमोलिक रतन मनिमय, तथा पावनघृत भरों।
सो तिमिरमोहविनाश आतमभास कारन ज्वै धरों ॥ शि० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

करपूर चंदन चूरभूर, सुगंध पावकमें धरों।
तसु जरत जरत समस्त पातक सार निजसुखकों भरों ॥ शि० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीफल अनार सु आम आदिक पक्वफल अति विस्तरों।
सो मोक्षफलके हेतु लेकर, तुम चरन आगें धरों ॥ शि० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलगंध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों बरों।
पूजों चरनरज भगतिजुत, जातें जगत सागर तरों ॥ शि० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

———

पंचकल्याणक

तोटक ।

तिथि दोयज सावन श्याम भयो । गरभागममङ्गल मोद थयो ॥
हरिहर्षित सची पितुमात जजे । हम पूजत ज्यों अघओघ भजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि ॥

बयसाख बदी दशमी बरनी । जनमें तिहिं सौम त्रिलोकधनी ॥
सुरमन्दिर ध्याय पुरन्दरने । मुनिसुव्रतनाथ हमें सरने ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०॥

तप दुद्धर श्रीधरने गहियो । बयसाखबदी दशमी कहियो ॥
निरुपाधि समाधि सु ध्यावत हैं । हम पूजत भक्ति बढ़ावत हैं ॥३॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि० ॥

वरकेवलज्ञान उद्योत किया । नवमी बयसाखवदी सुखिया ॥

घनि मोहनिशाभनि मोखमगा । हम पूजि चहैं भवसिंधु थगा ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां केवलज्ञानमङ्गलप्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

वदि वारस फागुन मोच्छ गये । तिहुँलोक शिरोमनि सिद्ध भये ॥
सु अनन्त गुनाकर विघ्न हरी । हम पूजत हैं मनमोद भरी ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

दोहा ।

मुनिगननायक मुक्तिपति, सूक्तव्रताकरयुक्त ।
भुक्तमुक्त दातार लिख, वन्दौं तनमम उक्त ॥ १ ॥

तोटक ।

जय केवलभान अमान धरं । मुनिस्वच्छसरोजविकासकरं ॥
भवसंकट भंजन लायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ २ ॥

घनघातव नन्दवदीस भनं । भविबोधत्रषातुरमेघघनं ॥
नित मंगलवृन्द वधायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ३ ॥
गरभादिक मङ्गलसार धरे । जगजीवनके दुखदंद हरे ॥
सब तत्त्वप्रकाशन वायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ४ ॥
शिवमारगमंडन तत्त्वकह्यो । गुनसार जगत्रय शर्म लह्यो ॥
रुज रागरु दोष मिटायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ५ ॥
समवस्रतमें सुरनार सही । गुन गावत नावत भालमही ॥
अरु नाचत भक्ति बढ़ाय कहैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ६ ॥
पगनूपुरकी धुनि होत भनं । झननं झननं झननं झननं ॥
सुरलेत अनेक रमायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ७ ॥
घननं घननं घन घंट बजैं । तननं तननं तनतान सजैं ॥
द्रिमद्री मिरदंग बजायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ८ ॥

छिनमें लघु औ छिन थूल बनें । जुत हावविभाव विलासपनें ॥
मुखतें पुनि यों गुनगायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ९ ॥
धृगता धृगता पगपावत हैं । सननं सननं सु नचावत हैं ॥
अति आनँदको पुनि पायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ १० ॥
अपने भवको फल लेत सही । शुभ भावनितें सब पाप दही ॥
तित ते सुखकों सब पायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ ११ ॥
इन आदि समाज अनेक तहां । कहि कौन सकै जु विभेद यहां ॥
धन श्रीजिनचंद सुधायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥ १२ ॥
पुनि देशविहार कियौ जिननें । वृष अम्रतवृष्टि कियो तुमनें ॥
हमको तुमरी शरनायक है । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥ १३ ॥
हमपै करुना करि देव अबैं । शिवराज समाज सुदेहु सबैं ॥
जिमि होहुँ सुखाश्रमनायक हैं । मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं ॥१४॥

भवि वृन्दतनी विनती जु यही। मुझ देहु अभैपद राज सही॥
हम आनि गही शरनायक हैं। मुनिसुव्रत सुव्रतदायक हैं॥ १५ ॥

घत्तानंद।

जय गुनगमधारी, शिवहितकारी, शुद्धबुद्ध चिद्रूपपती।
परमानँददायक दाससहायक, मुनिसुव्रत जयवंत जती ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

दोहा।

श्रीमुनिसुव्रतके चरन, जो पूजै अभिनंद।
सो सुरनर सुख भोगिकैं, पावै सहजानंद॥ १७॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

इति श्रीमुनिसुव्रतनाथपूजा समाप्त॥ २०॥

श्रीनमिनाथपूजा ।

रोडक ।

श्रीनमिनाथजिनेन्द्र नमों विजयारथनन्दन ।
विप्पादेवी मातु सहज सब पापनिकंदन ॥
अपराजित तजि जये मिथुलपुर वर आनन्दन ।
तिन्हें सु थापों यहां त्रिधाकरिके पदवन्दन ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठतिष्ठ । ठः ठः ॥
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट ॥

अष्टक

द्रुतविलम्बित ।

सुरनदीजल उज्जल पावनं । कनक भृंगभरों मनभावनं ॥

जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हरिमलै मिलि केशरसों घसों । जगतनाथ भवातपको नसों ॥

जजतुहौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

गुलकके सम सुन्दर तंदलं । धरत पुंजसु भुंजत संकुलं ॥

जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदसम्प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

कमल केतुकि बेलि सुहावनी । समरसूल समस्त नशावनी ॥

जजतु हौं नमिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीति लगायकें ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शशि सुधासम मोदक मोदनं । प्रबल दुष्ट छुधामद खोदनं ॥

जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांवुज प्रीति लगायकें ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुद्रोगनिवारणाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शुधि घृताश्रित दीपक जोइया। असममोह महातम खोइया।
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांवुज प्रीति लगायकें ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अमरजिह्वविषें दशगंधको। दहत दाहत कर्म कबँधकों ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांवुज प्रीति लगायकें ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

फलसुपक्क मनोहर पावने। सकल विघ्नसमूह नशावने ॥
जजतु हौं नमिके गुनगायकें। जुगपदांवुज प्रीति लगायकें ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जलफलादि मिलाय मनोहरं। अरघ धारत ही भय भौ हरं ॥

जजतु हौंन मिके गुनगायकें । जुगपदांबुज प्रीतिलगायकें ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि० ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक ।

पाइता छंद ।

गरभागम मंगलचारा । जुग आसिन श्याम उदारा ॥
हरिहर्षि जजे पितुमाता । हम पूजें त्रिभुवन-ताता ॥१॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भावतरणमङ्गलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जनमोत्सव श्याम असाढ़ा । दशमीदिन आनँद बाढ़ा ॥
हरि मन्दर पूजे जाई । हम पूजें मनवचकाई ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीआषाढ़कृष्णादशम्यां जन्मङ्गलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

तप दुद्धर श्रीधरधारा । दशमीकवि षाढ़ उदारा ॥

निज आतमरसभर लायौ। हम पूजत आनँद पायौ ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपकल्याणप्राप्ताय नमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०

सित मँगसिरग्यारस चूरे। चवघाति भये गुनपूरे ॥

समवस्रत केवलधारी। तुमकों नित नौति हमारी ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमार्गशीर्षशुक्लैकादश्यां केवलज्ञानमङ्गलप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

बयशाख चतुर्दशि श्यामा। हनि शेष वरी शिवबामा ॥

सम्मेदथकी भगवंता। हम पूजैं सुगुन अनन्ता ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं०

जयमाला।

दोहा।

आयु सहस दशवर्ष की, हेमवरन तनसार,

धनुष पंचदश तुंग तन, महिमा अपरम्पार ॥ १ ॥

चौपाई गाथा १६ ।

जै जै जै नमिनाथ कृपाला । अरिकुलगहनदहनदवज्वाला ॥
जै जै धरमपयोधर धीरा । जग भवभंजन गुनगंभीरा ॥ २ ॥
जै जै परमानँद गुनधारी । विश्वविलोकन जन हितकारी ॥
अशरन शरन उदार जिनेशा । जै जै समवशरन आवेशा ॥ ३ ॥
जै जै केवलज्ञानप्रकाशी । जै चतुरानन हनि भवफांसी ॥
जै त्रिभुवनहित उद्यमवन्ता । जै जै जै जै नमि भगवंता ॥ ४ ॥
जै तुम सप्ततत्त्व दरशायो । तास सुनत भविनिजरस पायो ॥
एक शुद्धअनुभवनिज भाखे । दोविधि राग दोष छै आखे ॥ ५ ॥
दो श्रेणी दो नय दो धर्मं । दो प्रमाण आगमगुन शर्मं ॥
तीनलोक त्रयजोग तिकालं । सल्ल पल्ल त्रय वात वलालं ॥ ६ ॥
चार बंध संज्ञागति ध्यानं । आराधन निक्षेप चउ दानं ॥

पंचलब्धि आचार प्रमादं । बंधहेतु पैताले सादं ॥ ७ ॥
गोलक पंचभाव शिव भौनें । छहों दरब सम्यक अनुकौनें ॥
हानिवृद्धि तप समय समेता । सप्तभंगवानीके नेता ॥८॥
संजम समुदघात भय सारा । आठ करम मद सिध गुनधारा ॥
नवों लबधि नवतत्त्व प्रकाशे । नोकषाय हरि तूप हुलाशे ॥६॥
दशों बन्धके मूल नशाये । यों इन आदि सकल दरशाये ॥
फेर विहरि जगजन उद्धारे । जै जै ज्ञान दरश अविकारे ॥१०॥
जै वीरज जै सूक्षमवंता । जै अवगाहन गुन वरनंता ॥
जै जै अगुरु लघू निरवाधा । इन गुनजुत तुम शिवसुख साधा ॥११॥
ताकौं कहतथके गनधारी । तौ को समरथ कहै प्रचारी ॥
तातें मैं अब शरनैं आया । भयदुख मेटि देहु शिवराया ॥१२॥
बारबार यह अरज हमारी । हे त्रिपुरारी हे शिवकारी ॥

परपरनतिको वेगि मिटायो। सहजानंदसरूपभिटायो ॥१३॥
वृन्दावन जांचत शिरनाई। तुम मम उर निवसो जिनराई ॥
जबलों शिव नहिं पावों सारा। तबलों यही मनोरथ म्हारा ॥१४॥

घत्तानंद।

जयजय नमिनाथं, हो शिवसाथं, औ अनाथके नाथ सदं।
तातें शिरनायो, भगति बढ़ायो, चिह्न चिह्न शतपत्र पदं ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा।

श्री नमिनाथतनें जुगल, चरन जजें जो जीव।
सो सुरनरसुख भोगकर, होवैं शिवतिय पीव ॥१६॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।
इति श्रीनमिनाथजिनपूजा समाप्त ॥ २१ ॥

श्रीनेमिनाथपूजा

छन्द लक्ष्मी, तथा अर्द्ध लक्ष्मीधरा ।

जैति जै जैति जै जैति जै नेमकी, धर्म औतार दातार श्यौचैनकी ।
श्रीशिवानंद भौफन्द निकन्द ध्यावै, जिन्हैं इन्द्र नागेन्द्र औ मैनकी ॥
पर्मकल्यानके देनहारे तुम्हीं, देव हो एव तातें करौं ऐनकी ।
थापि हौ वार त्रै शुद्ध उच्चार त्रै, शुद्धताधार भौपारकूं लेनकी॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन । अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिन । अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥

अष्टक

चाल होली, ताल जत्त ।

दाता मोच्छके श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० टेक ॥

निगमनदी कुश प्राशुक लीनौं, कंचनभृंग भराय ।

मनवचतनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय ॥

दाता मोच्छके, श्रीनेमिनाथ जिनराय, दाता० ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निवपामीति स्वाहा ॥

हरिचन्दनजुत कदलीनंदन, कुंकुमसंग घसाय ।

विघनतापनाशनके कारन, जजौं तिहारे पाय ॥ दाता० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुण्यराशि तुमजस सम उज्जल, तंदुल शुद्ध मँगाय ।

अखय सौख्य भोगनके कारन, पुंज धरौं गुनगाय ॥ दा० ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पुंडरीकतृणद्रुमको आदिक, सुमन सुगंधितलाय ।

दर्पकमनमथभंजनकारन, जजहुं चरन लवलाय ॥ दा० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

घेवर बावर खाजे साजे, ताजे तुरित मँगाय ।
क्षुधावेदनी नाश करनको, जजहुँ चरन उमगाय ॥दाता० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कनकदीपनवनीत पूरकर, उज्ज्वल जोति जगाय ।
तिमिरमोहनाशक तुमकों लखि, जजहुँ चरन हुलसाय ॥दा०॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दशविध गंध मँगाय मनोहर, गुंजत अलिगन आय ।
दशोंबंध जारनके कारन, खेवों तुमढिग लाय ॥ दा० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सुरसवरन रसनामनभावन, पावन फल सु मँगाय ।
मोक्षमहाफल कारन पूजों, हे जिनवर तुमपाय ॥ दाता० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलफलआदि साज शुचि लीनं, आठों दरब मिलाय ।
अष्टमछितिके राज करनकों, जजों अंग वसु नाय ॥ दाता ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक ।

पाइता छन्द ।

सित कातिक छट्ठ अमंदा । गरभागमआनँदकंदा ॥
शचि सेय सिवापद आई । हम पूजतमनवचकाई ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

सित सावन छट्ठ अमंदा । जनमें त्रिभुवनके चंदा ॥
पितु समुद महासुख पायो । हम पूजत विघन नशायो ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

तजि राजमती व्रतलीनों सितसावन छट्ठ प्रवीनों ॥
शिवनारी तबै हरपाई। हम पूजैं पद शिरनाई ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपःकल्याणकप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सित आशिन एकम चूरे। चारों घाती अति क्रूरे ॥
लहि केवल महिमा सारा। हम पूजैं अष्टप्रकारा ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदि केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सितषाढ़ अष्टमी चूरे। चारों अघातिया क्रूरे।
शिव उर्ज्जयंततें पाई। हम पूजैं ध्यान लगाई ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं आषाढशुक्लाष्टम्यां मोक्षमङ्गलप्राप्ताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला।

दोहा।

श्याम छवी तन चाप दश, उन्नत गुननिधिधाम।

शंख चिह्नपदमें निरखि, पुनि पुनि करों प्रनाम ॥ १ ॥

पद्धरी छंद (१६ मात्रा लघ्वन्त)।

जै जै जै नेमि जिनिंद चंद । पितु समुद देन आनंदकंद ॥
शिवमात कुमुदमनमोददाय । भविवृन्द चकोर सुखी कराय ॥ २ ॥
जय देव अपूरव मारतंड । तम कीन ब्रह्मसुत सहस खंड ॥
शिवतियमुखजलजविकाशनेश । नहिं रही सृष्टिमें तम अशेश ॥३॥
भविभीत कोक कीनों अशोक । शिवमग दरशायो शर्मथोक ॥
जै जै जै जै तुम गुनगँभीर । तुम आगम निपुन पुनीत धीर ॥ ४॥
तुम केवलजोति विराजमान । जै जै जै जै करुनानिधान ॥
तुम समवसरनमें तत्त्वभेद । दरशायो जातें नशत खेद ॥ ५ ॥
तित तुमकों हरि आनंदधार । पूजत भगतीजुत बहु प्रकार ॥
पुनि गद्यपद्यमय सुजस गाय । जै बल अनंत गुनवंतराय ॥६ ॥

जय शिवशंकर ब्रह्मा महेश । जय बुद्ध विधाता विष्णुवेष ॥
जय कुमतिमतंगनको मृगेंद्र । जय मदनध्वांतकों रवि जिनेंद्र ॥७॥
जय कृपासिंधु अविरुद्ध शुद्ध । जय रिद्धसिद्ध दाता प्रबुद्ध ॥
जय जगजनमनरंजन महान । जय भवसागरमहँ सुष्टु यान ॥८॥
तुव भगति करैं ते धन्य जीव । ते पावैं दिव शिवपद सदीव ॥
तुमरो गुन देव विविधप्रकार । गावत नित किन्नरकी जु नार ॥९॥
वर भगतिमाहिं लवलीन होय । नाचैं ताथेइ थेइ थेइ बहोय ॥
तुम करुणासागर सृष्टिपाल । अब मोकों वेगि करो निहाल ॥१०॥
मैं दुख अनंत वसुकरमजोग । भोगे सदीव नहिं और रोग ॥
तुमको जगमें जान्यों दयाल । हो वीतराग गुनरतनमाल ॥११॥
तातैं शरना अब गही आय । प्रभु करो वेगि मेरी सहाय ॥
यह विघन करम मम खंडखंड । मनवांछितकारज मंडमंड ॥१२॥

संसारकष्ट चकचूर चूर। सहजानंद मम उर पूर पूर॥
निज पर प्रकाशबुधि देह देह। तजिके विलंब सुधि लेह लेह॥ १३॥
हम जांचत हैं यह बार बार। भवसागरतें मों तार तार॥
नहिं सह्यो जात यह जगत दुःख। तातें विनवों हे सुगुनमुक्ख॥१४॥

घत्तानंद।

श्रीनेमिकुमारं जितमदमारं, शीलागारं, सुखकारं,।
भवभयहरतारं, शिवकरतारं, दातारं धर्माधारं॥ १५॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय महार्घं निवपामीति स्वाहा॥

मालिनी (१५ वर्ण)।

सुखधनजससिद्धि पुत्रपौत्रादि वृद्धि।
सकल मनसि सिद्धि होतु है ताहि रिद्धि॥
जजत हरषधारी नेमिको जो अगारी।

अनुक्रम अरिजारी सो वरे मोच्छनारी ॥ १६ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलि क्षिपेत् ।

इति श्रीनेमिनाथजिनपूजा समाप्त ॥ २२ ॥

श्रीपार्श्वनाथपूजा

कवित्त छन्द (मात्रा ३१) ।

प्रानतदेवलोकतें आये, वामादे उर जगदाधार ।

अश्वसेन सुतनुत हरिहर हरि, अंक हरिततन सुखदातार ॥

जरतनाग जुगबोधि दियो जिहिं, भुवनेसुरपद परमउदार ।

ऐसे पारसको तजि आरस, थापि सुभारस हेत विचार ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ । ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ।

अष्टक

प्रमिताक्षर ।

सुरछीरधिकाकनकुम्भ भरौं । तव पादपद्मतर धार करौं ॥
सुखदाय पाय यह सेवत हौं । प्रभुपार्श्व सार्श्व गुन बेवत हौं ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं जन्ममृत्युविनाशनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो जल निर्वपामीति स्वाहा ॥

हरिगन्ध कुंकुम कर्पूर घसौं । हरिचिह्न हेरि अरचौं सुरसौं ॥ सु० ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीभवतापविनाशनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यश्चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥

हिमहीरनिरजसमानशुचं । वरपुञ्ज तंदुल तवाग्र मुचं ॥ सु० ॥३॥

ॐ ह्रीं अक्षयपदप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥

कमलादिपुष्प धनुपुष्प धरी । मदभञ्जहेत ढिग पुञ्ज करी ॥सु० ॥ ४॥

ॐ ह्रीं कामबाणविध्वंसनाय श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्रेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चरु नव्यगव्य रससार करौं । धरि पादपद्मतर मोद भरौं ।सु०॥५॥

ॐ ह्रीं क्षुद्रोगनिवारणाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा॥५ ॥

मनिदीपजोत जगमग्ग मई। ढिगधारतें स्वपरबोध ठई॥ सु०॥६॥

ॐ ह्रीं मोहान्धकारविनाशनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

दशगंध खेय मन माचत है। वह धूमधूममिसि नाचत है॥सु०॥७॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मदहनाय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

फलपक्व शुद्ध रस जुक्त लिया। पदकंज पूजत हौं खोलि हिया॥सु०॥

ॐ ह्रीं मोक्षफलप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

जलआदि साजि सब द्रव्य लिया। कनथार धार नुतनृत्य किया॥सु०

ॐ ह्रीं अनर्घ्यपदप्राप्तये श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

पंचकल्याणक।

लक्ष्मीधरा।

पक्ष वैशाखकी श्याम दूजी भनों। गर्भकल्यानको द्यौस सोही गनों।
देवदेवेन्द्र श्रीमातु सेवैं सदा। मैं जजों नित्य ज्यों विघ्न होवै विदा॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

पौषकी श्याम एकादशीकों स्वजी । जन्म लीनों जगन्नाथ धर्म ध्वजी ॥
नाक नागेन्द्र नागेन्द्र पैं पूजिया । मैं जजों ध्यायकें भक्त धारोंहिया ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममगलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

कृष्णएकादशी पौषकी पावनी । राजकों त्याग वैराग धारयो वनी ॥
ध्यानचिद्रूपको ध्याय साता मई । आपको मैं जजों भक्ति भावें लई ॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

चैतकी चौथि श्यामा महाभावनी। तादिना घातिया घाति शोभावनी ॥
वाह्य आभ्यन्तरें छन्द लक्ष्मीधरा। जैति सर्वज्ञ मैं पादसेवा करा ॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां केवलज्ञानमङ्गलप्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

सप्तमीशुद्ध शोभै महासावनी । तादिना मोच्छपायो महापावनी ॥
शैलसम्मेदतें सिद्धराजा भये । आपकों पूजतें सिद्धकाजा ठये ॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

दोहा (जमकालंकार)

पाशपर्म गुनराश है, पाशकर्म हरतार ।
पाशशर्म निजवास द्यो, पाशधर्म धरतार ॥ १ ॥
नगरबनारसि जन्मलिय, वंश इख्वाक महान ।
आयु वरष शततुङ्ग तन, हस्त सुनौ परमान ॥ २ ॥

पद्धरी छंद ।

जय श्रीधर श्रीकर श्रीजिनेश । तुव गुन गन फणिगावत अशेश ॥
जय जय जय आनँदकन्द चन्द । जय जय भविपङ्कजको दिनन्द ॥३॥
जय जय शिवतियवल्लभ महेश । जग ब्रम्हा शिवशंकर गनेश ॥
जय स्वच्छचिदङ्ग अनङ्गजीत । तुव ध्यावत मुनिगन सुहृदमीत ॥४॥

जय गरभागममंडित महंत । जगजनमनमोदन परम संत ॥
जय जनममहोच्छव सुखदधार । भविसारंगको जलधर उदार ॥५॥
हरिगिरिवरपर अभिषेक कीन । झट तांडव निरत अरंभदीन ॥
बाजन बाजत अनहद अपार । को पार लहत वरनत अचार ॥६॥
द्रमद्रम द्रमद्रम द्रमद्रम मृदंग । घननन नननन घंटा अभंग ॥
छमछम छमछम छम छुद्रघंट । टमटम टमटम टंकोर तंट ॥७॥
झननन झननन नूपुर झँकोर । तननन तननन नन तानशोर ॥
सननननननननन गगनमाहिं । फिरिफिरिफिरिफिरिफिरिकी लहांहिं ॥
ताथेइ थेइ थेइ थेइ धरत पाव । चटपट अटपट झट त्रिदशराव ॥
करिकैं सहस्र करकों पसार । बहुभांति दिखावत भाव प्यार ॥८॥
निजभगति प्रगटजित करत इंद्र । ताकों क्या कहिं सकि हैं कविंद्र ॥
जहँ रंगभूमि गिरिराज पर्म । अरु सभा ईश तुम देव शर्म ॥१०॥

अरु नाचत मघवा भगतिरूप। बाजे किन्नर बज्जत अनूप ॥
सो देखत ही छवि बनत वृंद। मुखसों कैसे बरनै अमंद ॥११॥

धनघडी सोय धन देव आप। धन तीर्थंकर प्रकृती प्रताप ॥
हम तुमको देखत नयनद्वार। मनु आज भये भवसिंधु पार ॥१२॥
पुनिपिता सौंपि हरि स्वर्गजाय। तुम सुखसमाज भोग्यौ जिनाय ॥
फिर तपधरि केवल ज्ञानपाय। धरमोपदेश दै शिवसिधाय ॥ १३ ॥

हम सरनागत आये अधार। हे कृपासिंधु गुन अमलधार ॥
मो मनमें तिष्ठहु सदाकाल। जबलों न लहों शिवपुर रसाल ॥१४॥
निरवान थान सम्मेद जाय। 'वृंदावन' वंदत शीसनाय ॥
तुम ही हौ सब दुखदंद हर्न। तातें पकरी यह चर्नशर्न ॥ १५ ॥

घत्तानंद।

जयजय सुखसागर, त्रिभुवन आगर, सुजस उजागर, पार्श्वपती ॥

वृन्दावन ध्यावत, पूजरचावत, शिवथलपावत, शर्म अती ॥१६॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

कवित्त (मात्रा ३१)।

पारसनाथ अनाथनिके हित, दारिदगिरिकों वज्रसमान।
सुखसागरवर्द्धनको शशिसम, दँवकपायको मेघमहा ॥
तिनकों पूजै जो भविप्रानी, पाठ पढ़ै अति आनंद आन।
सो पावै मनवांछित सुख सब, और लहै अनुक्रमनिरवान ॥ १७ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

इति श्रीपार्श्वनाथजिनपूजा समाप्त ॥२३॥

श्रीवर्द्धमानजिनपूजा

मत्तगयंद।

श्रीमतवीर हरै भवपीर, भरै सुखसीर अनाकुलताई।

केहरिअंक अरीकरदंक, नये हरिपंकतिमौलि सुआई ॥
मैं तुमको इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति समेत हिये हरखाई ।
हे करुणाधनधारक देव, इहां अब तिष्ठ हु शीघ्रहि आई ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्र । अत्र अवतर अवतर । संवौषट् ॥ १ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र । अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ॥ २ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव । वषट् ॥ ३ ॥

अष्टक

अथ अष्टपदी (द्यानतरायकृत नंदीश्वराष्टकादिक अनेक रागोमें भी बने है) ।

क्षीरोदधिसम शुचि नीर, कंचनभृंग भरों ।
प्रभु वेग हरो भवपीर, यातैं धार करों ॥
श्रीवीरमहा अतिवीर सन्मतिनायक हो ।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मतिदायक हो ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

मलयागिरचंदन सार, केसरसंग घसा ।

प्रभु भव आताप निवार, पूजत हिय हुलसा ॥ श्री० ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति० ॥ २ ॥

तंदुलसित शशिसम शुद्ध, लीनों थार भरि ।

तसु पुंज धरों अविरुद्ध, पावों शिवनगरी ॥ श्री० ॥ ३ ॥

ॐ ह्री श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति० ॥ ३ ॥

सुरतरुके सुमन समेत, सुमन सुमनप्यारे ।

सो मनमथभंजनहेत, पूजों पद थारे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति० ॥ ४ ॥

रसरज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी ।

पद जज्जत रज्जत अद्य, भज्जत भूख अरी ॥ श्री० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति० ॥ ५ ॥

तमखंडित मंडितनेह, दीपक जोवत हों ॥

तुम पदतर हे सुखगेह, भ्रमतम खोवत हों ॥ श्री० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति० ॥ ६ ॥

हरिचंदन अगर कपूर, चूर सुगन्ध करा ।

तुम पदतर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा ॥ श्री० ॥७॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति०॥ ७ ॥

रितुफल कलवर्जित लाय, कंचनथार भरा ।

शिव फलहित हे जिनराय, तुमढिग भेट धरा ॥ श्री० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

जलफल वसु सजि हिमथार, तनमनमोद धरों ।

गुण गाऊं भवदधितार, पूजत पाप हरों ॥ श्री० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवर्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

पंचकल्याणक

राग टप्पाचालमें ।

मोहि राखो हो, सरना, श्रीवर्द्धमान जिनरायजी, मोहि राखो० ॥

गरभ साढ़सित छट्ट लियो थिति, त्रिशला उर अघहरना ।

सुर सुरपति तित सेव कर्‌यो नित, मैं पूजों भवतरना । मोहिरा०॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि०॥

जनम चैतसित तेरसके दिन, कुंडलपुर कनवरना ।

सुरगिर सुरगुरु पूज रचायो, मै पूजों भवहरना ॥ मोहिरा ० ॥ २॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि० ॥

मंगसिर असित मनोहर दशमी, ता दिन तप आचरना ।

नृप कुमारघर पारन कीनों, मैं पूजों तुम चरना ॥ मोहिरा० ॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

शुकलदशैं वैशाखदिवस अरि, घात चतुक छयकरना ।
केवललहि भवि भवसरतारे, जजों चरन सुख भरना ॥ मो० ॥४॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानकल्याणप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

कातिक श्याम अमावस शिवतिय, पावापुरतैं परना ।
गनफनिवृंद जजे तित बहुविधि, मैं पूजों भयहरना ॥ मो० ॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णामावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं नि०

जयमाला

छंद हरिगीता २८ मात्रा ।

गनधर असनिधर, चक्रधर, हरधर गदाधर वरवदा ।
अरु चापधर विद्यासुधर, तिरसूलधर सेवहिं सदा ॥
दुखहरन आनँदभरन तारन, तरन चरन रसाल हैं ।
सुकुमाल गुनमनिमाल उन्नत, भालकी जयमाल है ॥ १ ॥

घत्तानन्द ।

जय त्रिशलानंदन, हरिकृतवंदन, जगदानंदन, चंदवरं ।
भवतापनिकंदन तनकनमंदन, रहितसपंदन, नयन धरं ॥ २ ॥

छंद तोटक ।

जय केवलभानु कलासदनं । भविकोकविकाशनकंदवनं ॥
जगजीत महारिपु मोहहरं । रजज्ञानदृगा वर चूरकरं ॥ १॥
गर्भादिकमंगलमंडित हो । दुख दारिदको नित खंडित हो ॥
जगमाहिं तुमी सत पंडित हो । तुम ही भवभावविहंडितहो ॥ २ ॥
हरिवंशसरोजनकों रवि हो । बलवंत महंत तुमी कवि हो ॥
लहि केवल धर्मप्रकाश कियौ । अबलों सोई मारगराजति यौ ॥ ३ ॥
पुनि आप तने गुनमाहिं सही । सुर मग्न रहैं जितने सब ही ॥
तिनकी वनिता गुन गावत हैं । लय माननिसों मनभावत हैं ॥ ४॥

पुनि नाचत रंग उमंग भरी । तुअ भक्ति विषै पग यैम धरी ॥
झननं झननं झननं झननं । सुरलेत तहाँ तननं तननं ॥ ५ ॥
घननं घननं घनघंट बजै । द्रमद्रं द्रमद्रं मिरदंग सजै ॥
गगनांगनगर्भगता सुगता । ततता ततता अतता वितता ॥ ६ ॥
धृगतां धृगतां गति बाजत है । सुरताल रसालजु छाजत है ॥
सननं सननं सननं नभमैं । इकरूप अनेक जु धारि भमैं ॥ ७ ॥
कइ नारि सु वीन बजावति हैं । तुमरो जस उज्जल गावति हैं ॥
करतालविषै करताल धरैं । सुरताल विशाल जु नाद करैं ॥ ८ ॥
इन आदि अनेक उछाहभरी । सुरिभक्ति करैं प्रभुजी तुमरी ॥
तुमही जगजीवनिके पितु हौ । तुमही विनकारनतैं हितु हौ ॥
तुमही सब विघ्नविनाशन हौ । तुमही निज आनँदभासन हौ ॥
तुमही चितचिंतितदायक हौ । जगमाहिं तुम्ही सब लायक हौ ॥

तुमरे पनमंगलमाहिं सही। जिय उत्तम पुन्न लिया सब ही ॥
हमको तुमरी सरनागत है। तुमरे गुनमें मन पागत है॥ ११ ॥
प्रभु मोहिय आप सदा बसिये। जबलों वसु कर्म नहीं नसिये ॥
तबलों तुम ध्यान हिये वरतो। तबलों श्रुतचिंतन चित्त रतो ॥१२॥
तबलों व्रत चारित चाहतु हों। तबलों शुभ भाव सुगाहतु हों ॥
तबलों सतसंगति नित्त रहौ। तबलों मम संजम चित्त गहौ ॥१३॥
जबलों नहिं नाश करों अरिको। शिवनारि वरों मम समता धरिको
यह द्यो तबलों हमको जिनजी। हम जाचतु हैं इतनी सुनजी ॥१४॥

घत्तानंद।

श्रीवीरजिनेशा नमितसुरेशा, नागनरेशा भगतिभरा।
'वृंदावन' ध्यावै विघननशावै, वांछित पावै शर्म वरा ॥ १५ ॥
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमानजिनेन्द्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

दोहा।

श्रीसनमतिके जुगलपद, जो पूजै धरि प्रीत।

वृंदावन सो चतुरनर, लहै मुक्तिनवनीत ॥ १९ ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

इति श्रीवर्द्धमानजिनपूजा समाप्त ॥ २४ ॥

श्रीसमुच्चयअर्घ

तोटक।

सुनिये जिनराज त्रिलोक धनी।

तुममें जितने गुन हैं तिननी ॥

कहि कौन सकै मुखसों सब ही।

तिहिं पूजतु हौं गहि अर्घ यही ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादि वीरान्तेभ्यो चतुर्विंशतिजिनेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कवित्त ।

रिखब देवकों आदिअंत, श्रीवरधमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरनकमलको पूजै, जो प्रानी गुनमाल उचार ॥
ताके पुत्रमित्र धन जोबन, सुखसमाजगुन मिलै अपार ।
सुरपदभोगभोगि चक्री ह्वै, अनुक्रमलहै मोच्छपद सार ॥ २॥

इत्याशीर्वाद. ।

कविनामग्रामादिपरिचय

मनहरन ।

काशीजीमें काशीनाथ नन्हूंजी, अनंतराम,
मूलचंद, आढतसुराम आदि जानियो ।
सज्जन अनेक तहां धर्मचंदजीको नंद,

वृंदावन अग्रवाल गोल गोती आनियौ ॥
तानें रचे पाठ पाय मन्नालालको सहाय,
बालबुद्धि अनुसार सुनो सरधानियौ ।
याभें भूलचूक होय ताहि शोध शुद्ध कीज्यो,
मोहि अलपज्ञ जानि छिमा उरआनियौ ॥ १ ॥

॥ इति श्रीकविवरवृन्दावनकृत श्रीवर्तमानजिनचतुर्विंशति जिनपूजा समाप्त ॥

संवत् अट्ठारहसौ पचहत्तर १८७५ कार्तिककृष्ण अमावस्या गुरुवारको यह पुस्तक पूर्ण भया । लिखितं वृन्दावनेन निजपरोपकारार्थम् ।

श्रेयमस्तु । मंगलमस्तु ।

शुभम्भूयात ।

चौ.
१११

प्रकाशक—
श्रीनाथूराम प्रेमी,
मालिक—
जैन-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, पो० गिरगाँव–बम्बई।



मुद्रक—
श्रीरामकिशोर गुप्त,
साहित्य प्रेस, चिरगाँव (झाँसी)

पू.
१११